

CURRICULAR MATERIAL FOR DIPLOMA IN
ELEMENTARY EDUCATION (D.ELED) COURSE IN DIETS
OF ARUNACHAL PRADESH

हिंदी भाषा—शिक्षण

प्राथमिक स्तर

(कोर्स कोड - 10)

अनिल कुमार सिंह, 'प्राध्यापक'
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण
संस्थान, पासीघाट
अरुणाचल प्रदेश

आभार:

प्रस्तुत पुस्तक मेरे अनुभवों का प्रथम उद्गार है। अनुभवों को पुस्तकाकार प्रस्तुत करने में जिन विद्वानों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सहयोग होता रहा है, उनके प्रति आभार प्रकट करना गुरुतर कर्तव्य है। अतः सर्वप्रथम मैं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ईटानगर के सह-निर्देशक श्री गानिया लेज जी एवं उनके समस्त सदस्यों को आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस कार्य हेतु चयनित कर मुझे गौरव प्रदान किया। मेरा आप सभी के प्रति विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापन है क्योंकि आपके मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन के बिना यह कार्य संपन्न ही नहीं हो सकता।

‘ब्लू’ के हिंदी के विषय –विशेषज्ञ डॉ नंदलाल जी का मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने समय –समय पर मेरे शंकाओं एवं समस्याओं के समाधान हेतु भरपूर समय दिया।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान कामकी, पश्चिमी सियांग के हिंदी प्रवक्ता श्री आर.एन. यादव जी का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने गाहे-बगाहे इस रचना के दरम्यान अपनी वैचारिक उपस्थिति देकर मुझे कृतज्ञ किया।

इस कार्य को सभी दृष्टियों से परिपूर्ण एवं प्रामाणिक बनाने के लिए उक्त सभी विद्वत् जनों के अलावा हमारे कम्प्यूटर के प्राचार्य श्री ओधुक ताबिंग जी का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने पाठ्य-सामग्री के निर्माण में आने वाले समस्त दिक्कतों को सहजता प्रदान करने की महती कृपा की है।

पासीघाट, पूर्वी सियांग
अक्टूबर 2015

अनिल कुमार सिंह (प्राध्यापक)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
पासीघाट

भूमिका :-

अध्यापक-षिक्षा की गुणवत्ता तभी संभव है जब वह विद्यालयी-षिक्षा में अपने हुनर को शत-प्रतिशत प्रतिपादित करने में सफल हो। प्रारंभिक स्तर पर विद्यालयी-षिक्षा में व्यापक सुधार के लिए अध्यापक-षिक्षा में और अधिक गुणवत्ता व सुधार की आवश्यकता महसूस की गई। इसी उद्देश्य से षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई। इसके अंतर्गत प्रषिक्षणार्थियों को दो वर्ष का डिप्लोमा कोर्स करना होता है जिसे कम्प्लेक्स के नाम से जाना जाता है। इसके प्रथम वर्ष में प्राथमिक तथा द्वितीय वर्ष में उच्च प्राथमिक तक की कक्षाओं को पढ़ाने तथा विद्यालय अनुभव कार्यक्रम का प्रषिक्षण दिया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक प्रथम वर्ष के प्रषिक्षणार्थियों के लिए हिंदी-षिक्षण का एक कलेवर है। ज्ञातव्य है कि भारत का पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में हिंदी का पठन-पाठन अत्यंत ही दुरुह रहा है। प्रषिक्षणार्थियों को विषय-ज्ञान की सुविधा हेतु पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक में पाँचों इकाइयों की सामग्री प्रस्तुत की गई है।

प्रथम इकाई में भाषा, मातृभाषा, द्वितीय भाषा, एवं अन्य भाषा की जानकारी का प्राविधान है। साथ ही विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर पर भाषा की संप्राप्ति और अरुणाचल प्रदेश में हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग की प्रमुखता दी गई है। द्वितीय इकाई में हिंदी षिक्षण के उद्देश्य और भाषाई दक्षता का उल्लेख सम्मिलित है। तीसरी और चौथी इकाई पूर्ण रूपेण भाषा कौशल है। हिंदी तथा अन्य भाषाएँ सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखने पर ही आधारित है। बच्चा वही बोलता है जो सुनता है। यह पढ़ने तथा लिखने को भी प्रभावित करता है। इस बात को ध्यान में रखा गया है कि चारों कौशलों को कैसे विकसित किया जाए? इसके तहत तीसरे और चौथे इकाई में विभिन्न रूपों में समस्त कौशलों को सहज स्वरूपों द्वारा प्रदर्शित किया गया है। अंतिम व पाँचवी इकाई पाठ-योजना निर्माण

की है। पाठ-योजना प्रषिक्षणार्थियों के लिए विद्यार्थी और षिक्षण के बीच सेतु का काम करती है। पाठ-योजना यदि दुरुस्त है तो षिक्षण तो कारगर होगी ही। इसी बात को ध्यान में रखते हुए पाँचवें इकाई को संपन्न किया गया है।

आशा है प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक भाषा षिक्षकों, जिला एवं प्रषिक्षण संस्थानों के प्रषिक्षणार्थियों तथा अध्यापक प्रषिक्षकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। पुस्तक का उपयोग करने वाले पाठकों के सुधार संबंधी सुझावों का मैं स्वागत करूँगा।

अनिल कुमार सिंह (प्राध्यापक)
जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान
पासीघाट

पाठ्यक्रम

इकाई – 1

- भाषा, अर्थ और महत्त्व।
- प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए भाषा संप्राप्ति एवं भाषा सीखने की तैयारी।
- मातृभाषा, द्वितीय भाषा और अन्य भाषा।
- अरुणाचल में हिंदी का प्रयोग-संपर्क भाषा के रूप में द्वितीय भाषा के रूप में शिक्षण।

हिंदी शिक्षण के उद्देश्य

इकाई – 2

- कौशल संबंधी ज्ञान संबंधी, सहवृत्तियों संबंधी, सृजन संबंधी।
- भाषा में दक्षताओं का परिचय।

श्रवण एवं भाषण कौशल

इकाई – 3

- सरल आदेश, निर्देश एवं अनुरोधों का ज्ञान (कम से कम प्रत्येक के दस-दस उदाहरण बताएँ जाएँ एवं पढ़े जाएँ)
- सरल वार्तालाप, संवाद, भाषण एवं वाद-विवाद का परिचय एवं अभ्यास।
- रेडियो एवं दूरदर्शन के समाचारों को सुनकर समझना एवं कक्षा में सुनाना।
- शब्द खेल एवं पहेलियों को सुनकर समझना एवं सुनाना।
- उच्चारण शिक्षा-स्वर, व्यंजन, मात्राएँ, स्वर अनुनासिक अनुस्वार, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष, अघोष ध्वनि का श्रवण एवं उच्चारण अभ्यास।

- विराम चिह्नों के अनुसार (यति, गति, आरोह, अवरोह, बलाघात का भाषण में अभ्यास)
- ध्वनियों का शब्द-युग्मों में उच्चारण अभ्यास (दिन-दिन, सुन-सुन, मेल-मैल, ओर-और, आटा-आता, गदा-गधा, सिर-चिर) आदि।
- अभिव्यक्ति की क्रियाओं का नियोजन (स्वागत करना, परिचय देना, धन्यवाद ज्ञापन आदि अभिव्यक्ति सहित क्रियाओं का अभ्यास) कविताओं, कहानियों को हाव-भाव के साथ सुनाना तथा कहानियों का नाटकीकरण करवाना।
- मौखिक अभिव्यक्ति की विषेषताएँ।

वाचन एवं लेखन कौशल:

इकाई 4:

- शब्दों में वर्णों को अलग करके पढ़ना एवं लिखना।
- मोटे अक्षरों वाले फ्लैश कार्डों को पढ़ना।
- संयुक्त वर्णों को पढ़ना एवं लिखना।
- रास्ते पर चलने के संकेत : विज्ञापन पटों एवं सूचना पटों का वाचन करना एवं लेखन करना।
- पोस्टर सरल आकृतियों एवं अखबार को पढ़ना एवं पोस्टर बनाना, आकृतियाँ बनाना एवं सूचनाएँ लिखना।
- वाचन के रूप : सस्वर वाचन, मौन वाचन, गहन वाचन।
- शब्दकोष देखना एवं पढ़ना।
- लेखन शिक्षण की विधियाँ : सुलेख, अनुलेख, प्रतिलेख, श्रुतलेख।
- हिन्दी गिनती का शब्दों में एक से सौ तक लेखन।

पाठ-योजना निर्माण:

इकाई 5:

- मात्राओं एवं समस्यात्मक व्यंजन ध्वनियों की पाठ-योजना ।
- कहानी की पाठ-योजना ।
- कविता की पाठ-योजना ।
- गद्य-पाठ की पाठ-योजना ।

इकाई 1:

भाषा, अर्थ और महत्व:

भाषा:—

हमारे दो होंठ हैं। दोनों मिलते हैं। जुबान के साथ मिलकर एक लय में संचालित होते हैं तो भाषा बनती है। सामान्यतः भाषा मनुष्य की सार्थक व्यक्त वाणी को कहते हैं। भाषा शब्द 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है— 'व्यक्त वाणी' या 'बोलना'। वाक् शक्ति के बल पर ही मनुष्य एक श्रेष्ठ प्राणी बन सका है। भाषा की ध्वनियाँ अर्थ पूर्ण शब्दों का निर्माण करती हैं। शब्दों की सहायता से हम वाक्यों का निर्माण करते हैं और इन्हीं वाक्यों द्वारा हम अपने विचारों एवं भावों का आदान-प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए मानव परस्पर विचार-विनिमय के लिए जिन ध्वनि संकेतों को अपनाते हैं; वे सभी भाषा कहलाते हैं। विचार प्रकट करने का मूल आधार भाषा है। भाषा अनेकता में एकता ओर भेद में अभेदता लाकर सबका हित करती है।

अर्थ:—

भाषा में दो चीजें होती हैं— वाणी और अर्थ। वाणी और अर्थ दोनों अभिन्न होते हैं, क्योंकि जिस भाषा का हम प्रयोग करते हैं उसमें अर्थ होते हैं और वह सार्थक होती है। भाषा के अभिन्नता के विषय में गोस्वामीजी कहते हैं—

गिरा अरथ जल वीचि सम,

कहियत भिन्न न भिन्न।

अर्थात् शब्द और अर्थ जल के मध्य लहर के समान हैं, जो पानी से भिन्न नहीं है। भाषा जीवन का पर्यायवाची है। भाषा मानव समाज को ईश्वर की तरफ़ से एक वरदान है। भाषा सामाजिक वस्तु है और मनुष्य की अर्जित संपत्ति है। 'भाषा की खोज से सारा संसार गूँगों की बड़ी बस्ती बनने से बच गया।' इस

कथन से स्पष्ट है कि हमारी आज की सभ्यता का स्वरूप भाषा की प्रमुख देन है।

परिभाषा:—

भाषा की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

1. **महर्षि पतंजलि के अनुसार—** “जो वाणी वर्णों में व्यक्त होती है, उसे भाषा कहते हैं।
2. **डॉ बाबू राम सक्सेना—** “जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य स्वर विचार विनिमय करता है, उसकी समष्टि को भाषा कहते हैं।”
3. **पं. कामता प्रसाद गुरु—** “भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्टतया समझ लेता है।
4. **स्वीट के अनुसार—** “ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण भाषा है।”
5. **सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार—** “भाषा के आविर्भाव से सारा मानव संसार गूँगों की विराट बस्ती से बच गया।”
6. **ब्लॉक तथा ट्रेजर के अनुसार—** भाषा उस व्यक्त ध्वनि-चिन्हों की पद्धति को कहते हैं, जिसके माध्यम से समाज-समूह परस्पर व्यवहार करते हैं।”
7. **श्यामसुंदर दास के अनुसार—** “भाषा ध्वनि संकेतों का व्यवहार है।”
8. **काव्यादर्ष के अनुसार—** यह समस्त तीनों लोक अंधकारमय हो जाते, यदि शब्द रूपी ज्योति से यह संसार प्रदीप्त न होता।”
9. **सुमित्रानंदन पंत के अनुसार—** “भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, वह विषय की हृदय-तंत्री की झंकार है, जिनके स्वर यह अभिव्यक्ति पाती है।”

10. रामचंद्र वर्मा के अनुसार— “मुख से उच्चारित होने वाले शब्दों और वाक्यों आदि का समूह जिसके द्वारा मन की बातें बतायी जाती हैं, भाषा कहलाती है।”

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि भाषा में ध्वनि संकेतों का प्रयोग होता है। इन ध्वनि संकेतों से भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति होती है, ये ध्वनि संकेत रूढ़ तथा परंपरागत होते हैं, परंतु आवश्यकतानुसार नए भी बनते रहते हैं। साथ ही प्रत्येक वर्ग एवं समाज के ध्वनि संकेत दूसरे वर्ग के ध्वनि संकेतों से पृथक् होते हैं।

भाषा का महत्व:—

भाषा के बिना मनुष्य पशु के समान है। भाषा के कारण ही मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। भाषा का विकास वस्तुतः मनुष्य का विकास है। विचार प्रधान भाषा केवल मनुष्य के पास है। अन्य प्राणी जो भाव प्रकट करते हैं, वे अस्थायी होते हैं। मानव अपने पूर्वजों के भाव, विचार तथा अनुभवों को सुरक्षित रखने में भाषा के द्वारा ही सफल हुआ है। परंपरागत विचारों की अमूल्य निधि को सुरक्षित रख पाना भाषा के द्वारा ही संभव हो पाया है। दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक तथ्यों का प्रसार, अनुसंधान एवं आविष्कार की प्रेरणा तथा ज्ञान—विज्ञान की प्रगति को गति देने का कार्य भाषा के द्वारा ही संभव हो पाया है। भाई योगेंद्र जीत के अनुसार “भाषा ज्ञान के असीम अंश को ससीम बनाती है तथा निराकार विचारों को साकार रूप देती है।”

लिपि की सहायता से भाषा में स्थायित्व आ गया है। बिना भाषा के शिक्षा व ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है। भाषा के द्वारा ही किसी समाज का ज्ञान सुरक्षित है। भाषा सामाजिक एकता में सहायता तो पहुँचाती ही है, राष्ट्रीय एकता में भी भाषा की अपनी अहम भूमिका होती है। भाषा एकता की भावना जगाती है। ‘जयहिंद’ हमारे लिए शब्द और भावना मात्र ही नहीं है, अपितु देश

की एकता का आह्वान सूत्र भी है। इसी प्रकार के प्रेरणा सूत्रों (वंदे मातरम्; इंकलाब जिंदाबाद; आराम हराम है; जय जवान—जय किसान) से समय—समय पर इस देश में प्राणदायिनी शक्ति का संचार किया है।

भाषा के द्वारा ही शारीरिक, बौद्धिक एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। भाषा हमारी भावनाओं का विकास करती है। भाषा के द्वारा ही हम विचार, मनन एवं चिंतन को संप्रेषित करते हैं। भाषा का मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जीवन में बड़ा महत्व है। भौगोलिक स्थिति, आय, व्यवसाय और सामाजिक स्तर पर भाषा का प्रभाव रहा है।

संसार में कुल मिलाकर लगभग 2800 भाषाएँ हैं, जिनमें 13 ऐसी भाषाएँ हैं, जिनके बोलने वालों की संख्या साठ करोड़ से अधिक है। संसार की भाषाओं में हिंदी भाषा को तृतीय स्थान प्राप्त है। इसके बोलने वालों की संख्या तीस करोड़ के आस—पास है।

स्पष्ट है कि मानव तथा समाज के सर्वांगीण विकास में भाषा का महत्व ही व्याप्त है। इसका महत्व सभी कालों एवं देशों में समान रूप से स्वीकृत रहा है। भाषा के महत्व को निम्नलिखित विद्वानों ने इस प्रकार बताया है—

महात्मा गाँधी के अनुसार— “व्यक्ति के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा का ज्ञान उतना ही आवश्यक है, जितना कि शिशु—शरीर के विकास के लिए माता का दूध।”

बर्ट के अनुसार— “भाषा विहीन व्यक्ति केवल बुद्धि विहीन ही नहीं होते, बल्कि भावहीन भी हो जाते हैं।”

माइकल वेस्ट के अनुसार— “भाषा ही वह तत्व है, जिससे हमारी आत्मा का गठन होता है। भाषा का महत्व केवल बौद्धिक विकास में ही नहीं, वरन् चारित्रिक विकास में भी है।”

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए भाषा संप्राप्ति एवं भाषा सीखने की तैयारी:

भाषा का सीधा संबंध जीवन से है। भाषा परिवार और समाज से जोड़ने वाली कड़ी तथा उनकी अभिव्यक्ति व विचारों का माध्यम है। छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण में सबसे अधिक सहायता भाषा ही करती है। विद्यालय के अन्य विषयों की शिक्षा का माध्यम भी भाषा ही है। भाषा संप्राप्ति के द्वारा अनेक प्रकार की योग्यताएँ विकसित की जाती हैं, जिन्हें मोटे तौर पर तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

1. यांत्रिक योग्यता
2. अर्द्ध यांत्रिक योग्यता
3. चिंतनात्मक तथा सृजनात्मक योग्यता

भाषा सीखते समय, भाषा की यांत्रिक योग्यता को प्राप्त करना शिक्षार्थी के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इनमें शुद्ध वर्तनी, सुलेख आदि की योग्यता निहित है। इस योग्यता के लिए मांसपेशियों का नियंत्रित संयोजन आवश्यक है।

कुछ अर्द्धयांत्रिक योग्यताएँ ऐसी हैं जो भाषा के प्रयोग से स्वतः आती हैं। इसके उदाहरण हैं— पारस्परिक वार्तालाप, पठन तथा लेखन।

भाषा का उद्देश्य शिक्षार्थी को भाषा के प्रयोग में चिंतनात्मक तथा सृजनात्मक स्तर पर पहुँचाना है। इसके अंतर्गत ठीक ढंग से सोचने तथा महसूस करने की योग्यता का विकास करना आता है। प्राथमिक स्तर पर उक्त यांत्रिक दक्षताओं को सीख लेना चाहिए।

भाषा—संप्राप्ति के बाद ही विद्यार्थी अपनी अभिव्यक्ति का, अपने विचारों व भावों का संप्रेषण बखूबी से कर सकेगा। प्राथमिक स्तर तक विद्यार्थियों की भाषा—संप्राप्ति जितनी पुख्ता होगी उसकी ज्ञान व समझ उतनी ही मजबूत व कारगर होगी। अतः इस स्तर के विद्यार्थियों को भाषा पूरी निष्ठा, लगन, परिश्रम व रुचि से सीखना—सिखाना चाहिए। प्राथमिक स्तर तक विद्यार्थियों में निम्नलिखित शब्द—भंडार की जानकारी हो जानी चाहिए—

- (i) कक्षा पहली तक विद्यार्थियों को 500 शब्द भंडार
- (ii) कक्षा दूसरी तक विद्यार्थियों को 1500 शब्द भंडार
- (iii) कक्षा तीसरी तक विद्यार्थियों को 3000 शब्द भंडार
- (iv) कक्षा चौथी तक विद्यार्थियों को 4000 शब्द भंडार
- (v) कक्षा पाँचवीं तक विद्यार्थियों को 5000 शब्द भंडार सीख लेना चाहिए।

मातृभाषा:—

मातृभाषा बालक की अपनी भाषा है, जिसके साथ उसका आत्मीयता का संबंध होता है। इसके माध्यम से ही वह अपने आस-पास के वातावरण से परिचित होता है तथा अपनी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मातृभाषा का शब्दिक अर्थ है— माँ की भाषा, जिसे बालक माँ के सान्निध्य में रहकर सहज रूप से सुनता और सीखता है। मातृभाषा से तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष की उस भाषा से होता है, जिसके माध्यम से उस क्षेत्र के रहने वाले व्यक्ति मौखिक तथा लिखित रूप में अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। बालक केवल अपनी माता से ही नहीं अपितु अपने संपर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों तथा वातावरण से इस भाषा को सीखता है। चूँकि बालक माँ के साथ अधिक रहता है, इसलिए बचपन से सीखी गई इस बोली या भाषा को मातृभाषा का नाम दिया जाता है।

मातृभाषा बालक की पहली (प्रथम) भाषा कहलाती है। मातृभाषा को बालक अपने प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा सहज परिवेश में सीखता है। बालक को आस-पास के वातावरण से प्राप्त अनुभवों की स्थायी प्रतिमाएँ उसके मस्तिष्क पर अंकित होती जाती हैं। इन अनुभवों के विकास के साथ-साथ व्यक्ति की भाषाई क्षमताओं का निरंतर विकास होता जाता है।

मातृभाषा का जीवन और शिक्षा का गहरा संबंध है। मातृभाषा विद्यालय में पढ़ाया जाने वाला मात्र एक विषय या अन्य विषयों की शिक्षा का माध्यम ही नहीं,

अपितु विद्यार्थियों के दैनिक जीवन के अविभाज्य अंग भी हैं। व्यक्तित्व के निर्माण और बालक के संज्ञानात्मक विकास में मातृभाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। मातृभाषा के माध्यम से हम बोलते, लिखते, विचार करते और शिक्षा ग्रहण करते हैं। यही हमारी स्वप्नों तथा अनुभूतियों की भाषा है।

मातृभाषा का महत्व:—

मातृभाषा के महत्व को निम्नलिखित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

1. संज्ञानात्मक विकास और चिंतन का साधन:—

जन्म होने के बाद शिशु कुछ-कुछ चीजों को जानने, समझने की कोशिश करता है, इसी दरम्यान मातृभाषा का विकास होता है और आगे चलकर उसके बौद्धिक विकास का साधन बन जाती है। इस प्रकार भाषा का यह स्वरूप उसके जीवन की सृजनशीलता का आधार बन जाता है।

2. विचार विनिमय का साधन:—

अपने विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति जितनी सहजता, स्पष्टता और असरदार तरीके से अपनी मातृभाषा में बालक कर लेता है उतना अन्य भाषा से नहीं कर सकता। क्योंकि मातृभाषा स्वाभाविक व प्रकृति प्रदत्त भाषा है। इसमें भाव एवं विचार अपने आप आते चले जाते हैं। इसी के माध्यम से बालक अपने आस-पास के लोगों के साथ संबंध स्थापित करता है तथा प्रतिदिन के क्रिया-कलापों में संलग्न रहता है।

3. शैक्षिक महत्ता:—

विश्व के सभी शिक्षा शास्त्री मातृभाषा को ही शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ साधन मानते हैं। सबका कहना है कि जितनी सरलता से मातृभाषा के माध्यम से बालक शिक्षा प्राप्त करता है, किसी भाषा से नहीं। अन्य भाषाओं के जरिए अधिगम में अधिक मानसिक शक्ति लगानी पड़ती है तथा वह अपने विचारों व भावों को मौलिक रूप से अभिव्यक्त भी नहीं कर पाता।

4. चारित्रिक व नैतिक विकास में सहायक:—

शारीरिक व बौद्धिक विकास के साथ-साथ बालक के चारित्रिक व नैतिक विकास में मातृभाषा का सबसे अधिक योगदान है। माँ की प्रेरणादायी कहानियों से बालक के चरित्र में उत्थान होता रहता है। जिस बालक का मातृभाषा पर जितना अधिक अधिकार होगा, उसकी विचार शक्ति उतनी ही तीव्र होगी तथा वह उतना ही अधिक चरित्रवान होगा।

5. सामाजिक विकास:—

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही उठना, बैठना, खेलना—कूदना, बातचीत करना आदि आरंभ कर देता है। इसके लिए भाषा चाहिए और मातृभाषा इसका सर्वोत्तम साधन है। मातृभाषा के जरिए व्यक्ति में सामाजिकता को अधिक सुदृढ़ और मजबूत बनाता है, तथा वह स्थायी होता है।

मातृभाषा का पाठ्यक्रम में स्थान:—

प्रारंभिक शिक्षा यदि मातृभाषा में दी जाय तो इसका कोई सानी नहीं है। यह विद्यालय में पढ़ाया जाने वाला एक विषय ही नहीं, अन्य विषयों को सीखने का माध्यम भी है। अक्सर देखा गया है जिस बालक में मातृभाषा की पकड़ अधिक है, वह उतनी सरलता और जल्दी से अन्य विषयों का ज्ञानार्जन कर लेता है। इस दृष्टि से यह ज्ञात होता है कि जिस भाषा में बालक अधिक बोलता है, सोचता और कल्पना करता है वही भाषा उसकी शिक्षा का माध्यम भी हो ताकि अध्ययन किए जाने वाले विषयों को सही ढंग से समझने, उन पर स्वतंत्र रूप से चिंतन करने तथा उन्हें स्पष्ट एवं प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने में आसानी हो। इसी कारण सभी शिक्षाविदों ने इस बात पर बल दिया है कि शिक्षा का माध्यम सभी स्तरों पर, विशेषकर प्रारंभिक स्तर पर, मातृभाषा ही होनी चाहिए।

मातृभाषा के माध्यम से दिए जाने वाली शिक्षा से बालकों के ज्ञान में सहजता से वृद्धि होती है। मातृभाषा के द्वारा बालक अपनी अभिव्यक्ति का संप्रेषण बेरोक-टोक कर पाता है। भाषा स्पष्ट, शुद्ध, माधुर्य तथा प्रभावशाली होती है। अध्यापक भी विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण जितने स्वाभाविक और प्रभावपूर्ण ढंग से मातृभाषा के माध्यम से कर सकते हैं उतना संभवतः किसी अन्य भाषा में नहीं। मातृभाषा के जरिए दिए जा रहे क्षेत्रीय उदाहरण बड़ सटीक, सरल, रोचक और ग्राह्य होते हैं।

मातृभाषा बालक की समस्त शिक्षा का मूल आधार है। इसके द्वारा विविध विषयों का ज्ञान सहज ही बोधगम्य होता है। इससे न केवल सीखने में शक्ति और समय की बचत होती है बल्कि इसके माध्यम से अर्जित ज्ञान अधिक स्थायी होते हैं। इसलिए पाठ्यक्रम में इसका स्थान मिलना बालकों के हित में होता है। किंतु हमारे देश के बहुसंख्यक राज्यों में अभी लागू नहीं है जिन-जिन राज्यों ने मातृभाषा को पाठ्यक्रम में स्थान दिया है उसका नतीजा संतोषजनक रहा है।

द्वितीय भाषा:—

द्वितीय भाषा जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि अध्येता के लिए मातृभाषा से इत्तर (भिन्न) दूसरी भाषा है। मातृभाषा अधिगम के पश्चात् छात्र द्वितीय भाषा को सीखता है। सामान्यतया द्वितीय भाषा को वह बाहरी उद्देश्यों से प्रेरित होकर सीखता है। शिक्षण के संदर्भ में द्वितीय भाषा से तात्पर्य एक राष्ट्र की उन सभी भाषाओं से है, जो मातृभाषा से भिन्न किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से एक सूत्रता में आबद्ध है।

भाषा-शिक्षण का उद्देश्य है— भाषाई दक्षता उत्पन्न करना, उसको भाषा के प्रयोग में (व्यवहारिकता के संदर्भ में) प्रवीण कराना तथा उसमें अध्येय भाषा के व्यवहार की कुशलता उत्पन्न करना। द्वितीय भाषा शिक्षण एक विषिष्ट प्रक्रिया है।

अतः इसके शिक्षण में शिक्षक का ध्यान न केवल अध्येय भाषा पर होता है बल्कि छात्र की मातृभाषा पर भी केंद्रित करना पड़ता है। जीवन की अनिवार्य आवश्यकता के फलस्वरूप सीखी गई मातृभाषाओं के आधार पर नवीन भाषाओं की आदतों को विकसित करना जटिल कार्य है, क्योंकि एक ओर छात्र में भाषाई कुशलता उत्पन्न की जाती है, दूसरी ओर मातृभाषा की आदतों के कारण भाषा-अधिगम में उत्पन्न व्याघात को कम करने का प्रयास किया जाता है तो तीसरी ओर छात्रों को सीखने के लिए उत्प्रेरित किया जाता है। यही कारण है कि द्वितीय भाषा के अधिगम एवं शिक्षण को जटिल प्रक्रिया माना गया है।

द्वितीय भाषा अधिगम और अध्यापन की प्रक्रिया परस्पर संबद्ध होती है। छात्र प्रारंभिक वर्षों में जो कुछ सीखता है, अध्यापक से ही सीखता है। अध्यापक द्वारा दी गई जानकारी, सुझाव एवं निर्देशों के अनुकूल ही वह भाषा का व्यवहार करता है। द्वितीय भाषा सीखने में छात्र स्वतः उत्प्रेरित नहीं होता, सीखने के लिए उसे उत्प्रेरित करना पड़ता है।

द्वितीय भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के सम्मुख दो भाषाओं के आदर्श रूप वर्तमान रहते हैं। मातृभाषा के आदर्श रूपों पर तो छात्र सामान्यतः सहज अधिकार पा लेता है, परंतु अनेक कारणों से द्वितीय भाषा के मानक रूपों पर मातृभाषा भाषी के समान अधिकार पाने में असमर्थ रहता है। द्वितीय भाषा सीखने में मातृभाषा का प्रभाव विविध स्तरों पर दृष्टिगत होता है। अतः अध्यापक को भाषा-अधिगम एवं शिक्षण में व्याघात की मात्रा को यथासंभव कम करना आवश्यक है। अध्यापक द्वितीय भाषा का समुचित परिवेश गठित करता है, सामग्री को सुनियोजित एवं मनोवैज्ञानिक क्रम से प्रस्तुत करता है जिससे छात्रों में भाषाई कुशलता का विकास हो सके।

हिंदी का शिक्षण समस्त भारत में हिंदीतर प्रदेशों में द्वितीय भाषा के रूप में किया जाता है। केंद्र के साथ राज्यों का परस्पर संपर्क अधिक विकसित और

पुष्ट हो, इसके लिए हिंदीत्तर भाषा-भाषियों को हिंदी भाषा पर पर्याप्त अधिकार कराना आवश्यक है।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी अपनी व्यापकता के गुण के कारण, जिसमें व्यवस्थित प्रशासन, सरकारी कार्यों के सुसंपादन, लिखित और मौखिक विचार-विनिमय शामिल है।

अपने इन्हीं गुणों के कारण अरुणाचलप्रदेश में हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में प्राथमिक कक्षाओं से ही पाठ्यक्रमों में स्थान दिया गया है। कक्षा पहली से कक्षा दसवीं तक द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का शिक्षण अरुणाचल प्रदेश के निवासियों के लिए वरदान साबित हुआ है। अनेक बोलियों के बीच यहाँ हिंदी इसलिए समादृत हुई है क्योंकि सभी बोलियों के बीच एक कड़ी के रूप में प्रयुक्त हुई है जिसमें द्वितीय भाषा के रूप में शिक्षण का होना प्रमुख कारण है।

अन्य भाषा:—

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपना विस्तार चाहता है। उसके लिए केवल अपनी मातृभाषा से काम नहीं चलता। अपने विचारों को बखूबी इस्तेमाल करने के लिए, अपने समस्त कार्यों में सफलता पाने के लिए अन्य भाषा सीखने की आवश्यकता पड़ती है। भाषा सीखने की प्रक्रिया मानव जीवन के साथ जुड़ी है।

अन्य भाषा अधिगम की प्रक्रिया जटिल है। इसमें मातृभाषा का समुचित ज्ञान रखने वाले छात्रों को दूसरी भाषा सिखाने का प्रयास किया जाता है। भाषा-अधिगम अन्य विषयों की तुलना में कठिन प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि भाषाई कुशलता का विकास करना भी है। अन्य भाषा अधिगम मातृभाषा अधिगम से बिल्कुल अलग प्रक्रिया है, मातृभाषा अधिगम अनिवार्य आवश्यकताजन्य प्रक्रिया है, परंतु अन्य भाषा सीखने में इस प्रकार की

अनिवार्यता नहीं होती। फलस्वरूप मातृभाषा में तो सामान्यतः सभी छात्रों में भाषाई कुशलता विकसित हो जाती है परंतु अन्य भाषा में कुछ ही लोग दक्षता के स्तर को छू पाते हैं।

अन्य भाषा का छात्र अपेक्षाकृत वयस्क (उम्रदराज) होता है। अन्य भाषा सीखने से संबंधित प्रश्न सहज रूप से उसके मस्तिष्क में उत्पन्न होता है। इसे सीखने में कई स्तरों पर कठिनाई होती है। जैसे— ध्वनि का ठीक उच्चारण न होना, शब्द-भंडार की कमी होना, सांस्कृतिक भिन्नता का अभाव होना, लिपि व्यवस्था सीखने में बाधक होना इत्यादि कठिनाइयाँ अन्य भाषा सीखने में आती हैं। अन्य भाषा सीखने में सबसे अधिक कठिनाई मातृभाषा के व्याघात द्वारा उत्पन्न होती है। यानी मातृभाषा का आदत का प्रभाव अन्य भाषा पर भी पड़ता है। इसीलिए अरुणाचल में कहीं-कहीं खाना को 'काना' छाता को 'साता' साथी को 'साती' धोनी को 'दोनी' इत्यादि ध्वनियों के उच्चारण में गड़बड़ी होती है।

अन्य भाषा सीखने में स्वाभाविक दक्षता का निश्चित महत्व है। इसे सीखने में बुद्धि और व्यक्तित्व का भी योगदान रहता है। जिनकी स्मरण-शक्ति तीव्र होती है, वह अन्य भाषा के शब्द-भंडार को जल्द सीख लेता है। अन्य भाषा सीखने में तत्परता का विशेष स्थान है। जो जितना इसके प्रति रुचि और रुझान दिखाता है, वह उतना जल्दी अन्य भाषा सीख लेता है।

विद्यालय अन्य भाषा के शिक्षण का औपचारिक केंद्र है। जिन विद्यालयों में अन्य भाषा के शिक्षण की समुचित व्यवस्था है, जहाँ भाषा-प्रयोग के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं उन विद्यालयों के छात्रों की भाषाई योग्यता सुविधा-विहीन विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अधिक संपुष्ट है।

अन्य भाषा में दक्षता हासिल करने के लिए विद्यालयों में उपयुक्त शिक्षण विधियों, तकनीकी एवं युक्तियों, शिक्षण सामग्री की उपयुक्तता, पर्याप्तता एवं

विविधता परीक्षण सामग्री का निर्माण, शैक्षिक उपकरणों की उपलब्धता एवं अध्यापकीय कुशलता का विषय महत्व है।

अरुणाचल प्रदेश में हिंदी का प्रयोग:

संपर्क भाषा के रूप:-

वह भाषा जो सांस्कृतिक और भाषिक स्तर पर प्रदेश व देश को जोड़ने का काम करती है, उसे संपर्क भाषा कहते हैं। दूसरे शब्दों में दो भिन्न भाषा-भाषियों के बीच परस्पर विचार विनिमय की भाषा को संपर्क भाषा कहते हैं।

अरुणाचल प्रदेश एक बहुबोलियों वाला प्रदेश है। इस प्रदेश की संप्रेषण व्यवस्था में एक ऐसी भाषा की अपेक्षा की जाती है, जो संपर्क भाषा की भूमिका निभा सके। संपर्क भाषा सांस्कृतिक एवं भाषिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है। सदियों से ही राज्य स्तर पर विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच हिंदी संपर्क की भाषा का कार्य करती आयी है। आधुनिक समय में इस प्रदेश में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ता चला जा रहा है। अंतर-क्षेत्रीय स्तर पर विचार-विनिमय और संपर्क स्थापन की दृष्टि से यह भाषा अरुणाचल प्रदेश के लिए प्रयोजन सिद्ध भाषा है। हिंदी इस प्रदेश की द्वितीय भाषा के रूप में भी अपना स्थान स्थापित कर चुकी है। इसलिए यह भाषा इस प्रदेश की हर-जुबा भाषा है।

द्वितीय भाषा के रूप में शिक्षण:-

अरुणाचल प्रदेश में हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में कक्षा प्रथम से दसवीं तक शिक्षण प्रदान किया जाता है। इसे सीखने में छात्रों को प्रयास करने की आवश्यकता पड़ती है। मातृभाषा महज एक छोटे से दायरे में व्यवहृत होती है, अतएव वैचारिक विस्तार के लिए, जनसंपर्क की भागीदारी के लिए, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान के लिए हिंदी शिक्षण के माध्यम से प्रयास किया जा रहा है। कुल मिलाकर हिंदी इस प्रदेश की सामाजिक अस्मिता

की भाषा बनती जा रही है, जिसमें हिंदी शिक्षण अपनी अहम भूमिका निभा रही है। द्वितीय भाषा के रूप में यहाँ हिंदी शिक्षण का मुख्य उद्देश्य हिंदी शिक्षण के समस्त कौशलों का विकास करते हुए राष्ट्रीय भावना को जोड़ने का विशेष योगदान हो रहा है।

इकाई 2:

हिंदी शिक्षण के उद्देश्य

भाषा अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन है। भाषा हमारे चिंतन, मनन एवं ज्ञान का आधार है। प्रत्येक विषय के अध्ययन का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। हिंदी भाषा सीखने का उद्देश्य यही है कि बालक मौखिक तथा लिखित रूप में अच्छी तरह से विचार-विमर्श कर सके। इस दृष्टि से हम हिंदी शिक्षण के उद्देश्यों को चार भागों में बाँट सकते हैं—

- | | |
|-----------------------|-----------------|
| 1. कौशल संबंधी | 2. ज्ञान संबंधी |
| 3. सहवृत्तियाँ संबंधी | 4. सृजन संबंधी |

1. कौशल संबंधी:—

कौशल संबंधी उद्देश्यों के अंतर्गत सुनना, बोलना पढ़ना एवं लिखना और अर्थ ग्रहण करना जैसे कौशल आते हैं। इस उद्देश्य के अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्यों का अवलंबन लिया जाता है:

- (i) छात्रों में सुनकर अर्थ ग्रहण करने या भाव ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।
- (ii) बोलकर अपने विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त करना।
- (iii) तथ्यों को पढ़कर भाव ग्रहण करने की क्षमता पैदा करना।
- (iv) शुद्ध उच्चारण के साथ लिखित भाषा का सस्वर एवं मौन वाचन करते हुए अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।
- (v) आरोह-अवरोह एवं यति-गति के साथ भाषा का अध्ययन करना।
- (vi) वक्तृत्व कला का विकास करना।
- (vii) भावों, विचारों तथा तथ्यों का मूल्यांकन करना।

2. ज्ञान संबंधी :-

ज्ञान संबंधी उद्देश्यों के अंतर्गत छात्रों को भाषा व साहित्य की मूलभूत बातों का ज्ञान प्रदान करना है। ज्ञान संबंधी उद्देश्यों के अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैं—

- (i) छात्रों को हिंदी की ध्वनियों का ज्ञान कराना।
- (ii) छात्रों को शब्द एवं रचना का ज्ञान कराना।
- (iii) सूक्तियों तथा लोकोक्तियों का ज्ञान कराना।
- (iv) छात्रों को हिंदी की विविध विषयों जैसे— कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, कविता आदि का ज्ञान कराना।
- (v) भाषा के तत्वों का ज्ञान कराना।
- (vi) वैचारिक विषय—वस्तु का ज्ञान कराना।
- (vii) रचना के विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करना।

3. सहवृत्तियाँ संबंधी:-

इसके अंतर्गत मुख्यतः दो अभिवृत्तियों का उचित विकास होता है—

(क) भाषा और साहित्य में रुचि और

(ख) सद्वृत्तियों का विकास

इसके आधार पर छात्रों में निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति होती है—

- (i) छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- (ii) पाठ्य—क्रम के अलावा अन्य पुस्तकें पढ़ना।
- (iii) कक्षा व विद्यालय में होने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेना।
- (iv) ग्रंथालय का उपयोग करना।
- (v) संस्कृति व सभ्यता का अध्ययन करना।
- (vi) वातावरण के प्रति संवेदनशील तथा सहृदय होना।
- (vii) आस्था, श्रद्धा, प्रेम, सहृदयता आदि मानवीय गुणों का विकास करना।

(viii) सद्वृत्तियों से सम्मत क्रियाएँ करना।

4. सृजन संबंधी:—

इसे रचनात्मक उद्देश्य भी कहते हैं। सृजन से तात्पर्य नई मौलिक रचना की क्षमता पैदा करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निबंध, कहानी, कविता, पत्र आदि को माध्यम बनाया जा सकता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैं—

- (i) छात्रों को लिखने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्रदान करना।
- (ii) छात्रों में मौलिकता उत्पन्न करना तथा उसे बढ़ाना।
- (iii) छात्रों को निबंध, कहानी, कविता, उपन्यास, पत्र, संवाद आदि की संरचना के लिए निरंतर प्रोत्साहन देना।
- (iv) विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराना।
- (v) छात्रों को विषय तथा प्रसंग के अनुसार शैली का ज्ञान कराना तथा उसका उपयोग करना।
- (vi) भावों की अभिव्यंजना तथा विचारों के प्रगटीकरण के लिए प्रेरित करना।
- (vii) छात्रों से ग्रहण किए हुए तथा स्वयं के मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करना।

हिंदी शिक्षण के उद्देश्य का निर्धारण एक जटिल कार्य है। भाषा मानव जीवन की एक सहज प्रक्रिया है, इसे बालक अनायास ही सीख लेता है। भाषा संबंधी योग्यताओं का निर्धारण सुनने, बोलने, पढ़ने एवं लिखने के रूप में किया जाता है। इसके लिए इसके शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण भी इन्हीं योग्यताओं को आधार बनाकर किया जाना आवश्यक है।

भाषा में दक्षताओं का परिचय:—

भारत में समता और गुणवत्ता की दृष्टि से प्राथमिक स्तर की शिक्षा—व्यवस्था में भिन्नता है। ग्रामीण, शहरी तथा पिछड़े इलाके के विद्यालयों में

सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित विद्यालयों में ये भिन्नता साफ़ दिखाई देती है। शैक्षिक समता व गुणवत्ता संबंधी इस असंगत स्थिति में सुधार लाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में दो बातें सिफारिश की गई हैं। पहली, विद्यालय के प्रत्येक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तरों का निर्धारण हो और दूसरी, उनकी प्राप्ति के लिए प्रत्येक विद्यालय में न्यूनतम शैक्षिक सुविधाओं की व्यवस्था की जाए। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग ने 1990 में विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से प्राप्त न्यूनतम अधिगम स्तरों का निर्धारण किया। इन्हीं को “क्षमताओं” या “दक्षताओं” का नाम दिया गया। दक्षताओं का ‘पूर्ण विकास’ ;डेंजमतल स्मंतदपदहद्ध सभी विद्यार्थियों में अनिवार्य है।

भाषा की प्रमुख नौ मूल दक्षताएँ— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, विचारों का बोधन, व्यावहारिक व्याकरण, स्व-अधिगम भाषा प्रयोग और शब्द भंडार पर अधिकार विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में और उसके दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्राथमिक स्तर पर भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर से तात्पर्य भाषा संबंधी उपर्युक्त सभी नौ अपेक्षित कौशलों अथवा दक्षताओं से हैं जिनका पूर्ण विकास कक्षा पाँच के अंत तक के लगभग सभी विद्यार्थियों में हो जाना चाहिए।

हिंदी भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर – दक्षता परिचय:—

हिंदी भाषा में न्यूनतम अधिगम स्तर प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अलग-अलग रूपों में निर्धारित किया गया है। प्रत्येक स्तर पर अधिगम की दक्षता अपूर्ण होने पर अगली कक्षा के अधिगम में कठिनाई आती है। अतः कक्षानुसार दक्षताओं को सीखने के बाद ही आगे की दक्षताएँ सिखाई जाएं, क्योंकि आगे आने वाली दक्षता सीखी हुई दक्षता पर आधारित होती है क्योंकि सभी एक दूसरे से जुड़ी हुई है। प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर इस प्रकार हैं—

प्राथमिक स्तर पर:-

प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम की जाँच भाषाई कौषलों- सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना कौषल में निम्न रूपों उसके न्यूनतम अधिगम स्तर को निर्धारित किया गया है।

‘सुनना’ में अधिगम स्तर:-

- (i) सरल एवं परिचित पदों, कविताओं, कहानियों को सुनकर समझना।
- (ii) वार्तालाप एवं संवादों को सुनना तथा समझना।
- (iii) पहेली, शब्द-खेल, वर्णन, विवरण को सुनकर समझना।
- (iv) सरल क्रियाओं को करने तथा खेलों के मौखिक निर्देशों को समझना।
- (v) विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम, प्रतियोगिता, नाटक, कविता-पाठ आदि को सुनकर समझना।

‘बोलना’ में अधिगम स्तर:-

- (i) वाक्यों को सही-सही दोहराना।
- (ii) कविता, गीत व पदों को हाव-भाव, क्रिया एवं अंग संचालन के साथ सुनाना।
- (iii) प्रश्न पूछना।
- (iv) भाषा की सभी ध्वनियों का उच्चारण करना।
- (v) प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्य में देना।
- (vi) बिना रुके स्वाभाविक रूप से बोलना।
- (vii) प्रतियोगिता में भाग लेकर सहज रूप से बोलना।

‘पढ़ना’ में अधिगम स्तर:-

- (i) वर्णों को अलग एवं मिलाकर पढ़ना।

- (ii) सरल परिचित शब्दों का सस्वर वाचन करना ।
- (iii) छपी विषय सामग्री को पढ़ना ।
- (iv) विज्ञापनों, सूचना पटों के आदेशों को सरलतापूर्वक पढ़ना ।
- (v) हाथ के लिखे पत्रों को पढ़ना ।
- (vi) अखबार, चार्ट, नक्शे आदि को पढ़ना ।

‘लिखना’ में अधिगम स्तर:—

- (i) दिए गए स्वर, व्यंजन, मात्रा एवं संयुक्ताक्षरों को देखकर लिखना ।
- (ii) मात्रा, संयुक्ताक्षरों का श्रुतलेख करना ।
- (iii) परिचित वाक्यों को लिखना ।
- (iv) निर्देशानुसार सरल वर्णनात्मक वाक्य लिखना ।
- (v) अपरिचित शब्दों, वाक्यों का श्रुतलेख लिखना ।
- (vi) सरल विराम चिह्नों सहित श्रुतलेख लिखना ।
- (vii) स्वतंत्र सरल निबंध लेखन, पत्र—लेखन करना ।

उपर्युक्त इन चारों कौषलों के अलावा विचार—बोधन, व्यावहारिक व्याकरण का प्रयोग, स्वाधिगम, मसिसमंतदपदहृद्ध और भाषा—प्रयोग संबंधी न्यूनतम अधिगम स्तर पर ध्यान केंद्रित किया गया है तथा पढ़कर शब्द—भंडार बढ़ाने जैसे—

कक्षा प्रथम के लिए 1500 शब्द

कक्षा द्वितीय के लिए 2000 शब्द

तृतीय कक्षा के लिए 3000 शब्द

चतुर्थ कक्षा के लिए 4000 शब्द और

पंचम कक्षा के लिए 5000 शब्द—भंडार प्रत्येक विद्यार्थी के न्यूनतम अधिगम स्तर होना चाहिए ।

इकाई 3

श्रवण एवं भाषण कौशल

श्रवण एवं भाषण कौशल भाषा कौशल का मुख्य कौशल है। श्रवण (सुनना) के माध्यम से दूसरों के विचारों तथा भावों को ग्रहण किया जाता है। बोलने का संबंध विचारों तथा भावों की मौखिक अभिव्यक्ति से है। इस प्रकार भाषा के मुख्य कौशलों का संबंध भाषा की मुख्य व्यवस्था ध्वनि व्यवस्था से है। संप्रेषण का वास्तविक कार्य मुख्य कौशलों के द्वारा ही संपादित होता है। अतः सुनना (श्रवण) और बोलना (भाषण) भाषा शिक्षण का प्रारंभिक एवं महत्वपूर्ण सोपान है।

श्रवण कौशल:—

निम्नलिखित क्रिया-कलापों द्वारा श्रवण कौशल में दक्षता प्राप्त कर सुनने की कुशलता में वृद्धि की जा सकती है।

सरल आदेश:—

सुनने की कुशलता को विकसित करने के लिए कक्षा में शिक्षक द्वारा बच्चों को उनकी समझ की भाषा में छोटे-छोटे वाक्यांशों या वाक्यों में सरल आदेश देना चाहिए। ध्यान रहे शब्द या वाक्यांश छात्रों के परिचित होने चाहिए। जैसे—

- | | |
|----------------|----------------------|
| 1. राम पढ़ो। | 6. बैठ जाओ। |
| 2. मत खेलो। | 7. उधर मत झांको। |
| 3. सीता आओ। | 8. मीनम जरा सा हटो। |
| 4. किताब लाओ। | 9. पंक्ति सीधी करो। |
| 5. सामने देखो। | 10. घर की सफ़ाई करो। |

ऐसे सरल एवं परिचित शब्दों द्वारा दिए गए आदेशों से छात्रों का श्रवणेन्द्रियां सक्रिय एवं ग्राह्य बनती हैं जो भाषा कौशल को विकसित करने में सहायक सिद्ध होती है।

निर्देश:-

नियमों के पैमाने में दिए जाने वाले हिदायत निर्देश कहलाता है। यह मौखिक एवं लिखित दोनों रूपों में होता है। श्रवण कौशल को मौखिक निर्देश भी समृद्ध बनाता है, इसलिए कक्षाओं में निर्देशों का प्रयोग करके इस कौशल में वृद्धि की जा सकती है। जैसे—

1. यहाँ शोरगुल करना मना है।
2. नियमों का पालन करना ज़रूरी है।
3. भोजन के बाद अपनी-अपनी थाली को साफ़ करना है।
4. राष्ट्रगान गाते समय सभी सावधान मुद्रा में खड़े रहेंगे।
5. सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
6. यहाँ पेशाब करना मना है।
7. यह आम रास्ता नहीं है।
8. उदाहरण के अनुसार खाली जगह भरिए।
9. केवल नीली स्याही से लिखिए।
10. सभी प्रश्नों को ध्यान से पढ़िए।

अनुरोध:-

व्यावहारिक जीवन में अनुरोधात्मक शब्दों की बड़ी अहमियत है। कार्य की सिद्धि में सहज एवं नम्रतापूर्ण ढंग से पेश किए जाने वाले अनुरोधात्मक शब्दों या वाक्यों को श्रोता बड़े ध्यान से सुनते हैं तथा उसके हृदय पर निवेदन भरे ध्वनियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। बालकों को भी कक्षा में ऐसे वाक्यों से परिचित कराना चाहिए ताकि वे अपने व्यावहारिक जीवन में इसका प्रयोग कर सकें। उदाहरणार्थ—

1. कृपया छुट्टी देने की कृपा करें।

2. कृपया मुझे जाने दीजिए न।
3. क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?
4. क्या आप मेरी सहायता करेंगे?
5. मुझे घर तक छोड़ने की कृपा करें न।
6. आप लोग मुझे मेरी हालत पर छोड़ दें।
7. महाशय, आज मैं घर थोड़ा जल्दी जाना चाहता हूँ।
8. क्या आप मेरी प्रार्थना पर थोड़ा गौर करेंगे?
9. कृपया पंखे का स्विच ऑन कर दें।
10. मैं थोड़ा बाहर घूमना चाहता हूँ।

सरल वार्तालाप:—

घर—परिवार, हाट—बाज़ार, यात्रा, खेल—कूद आदि स्थानों पर हम एक दूसरे से बातचीत करते रहते हैं। इसे ही सरल वार्तालाप कहते हैं। इसमें अभिव्यक्ति की शब्दावली, वाक्य—विन्यास तथा विषय—वस्तु बहुत सरल होती है। बातचीत के इस प्रयोजन से बालक अभिव्यक्ति की नई—नई शब्दावली सीखता है। कक्षा में भी बालकों को उनके रुचि के अनुसार बातचीत करने का मौका देना चाहिए। उनकी आपसी बातचीत से उनमें सुनने का कौशल का विकास होता है, क्योंकि आपसी बातचीत की शब्दावली परिचित होती है और वे उसे बड़े ध्यान से सुनने को उत्सुक होते हैं।

संवाद:—

बच्चों में भावानुरूप बोलने एवं पढ़ने की क्षमता का विकास, आत्म—अभिव्यक्ति के प्रदर्शन तथा व्यक्ति स्थिति के अनुरूप भाषा व्यवहार करने की योग्यता के विकास का यह सशक्त साधन है। शिक्षक को चाहिए कि पात्रों के भावानुकूल वाचन का आदर्श छात्रों के सामने प्रस्तुत करें। पाठों का व्यक्ति वाचन कराएं तथा फिर विभिन्न पात्रों की भूमिका के आधार पर विद्यार्थियों द्वारा

कक्षाभिनय के रूप में प्रदर्शित कराएँ। मौखिक अभिव्यक्ति की इस विधा को श्रोता छात्र बड़े ध्यान से संवादों के कथन को श्रवण करते हैं।

वाद—विवाद:—

वाद—विवाद में दो पक्षों का होना ज़रूरी है। पहले पक्ष द्वारा व्यक्ति (वक्ता) किसी विषय पर अपना विचार प्रस्तुत करता है तथा दूसरा पक्ष उसके विचारों के प्रति—पक्ष में अपने विचार रखकर तर्क द्वारा अपनी बात को सिद्ध साबित करता है। इस विधा से विद्यार्थियों में तार्किक—शक्ति, हाजिर—जवाबी, हास्य—व्यंग्य, विनोद—प्रियता, विचारों को संक्षिप्त रूप से अवसर के अनुकूल कहने तथा दूसरे के विचारों को धैर्यपूर्वक सुनने और समझने जैसे गुणों का विकास होता है। इससे छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

शिक्षक को चाहिए कि वाद—विवाद के विषय को छात्रों के ज्ञान के स्तर तक ही चयनित करें। प्रतियोगिता में छात्रों को बढ़—चढ़कर भाग लेने को प्रेरित करें तथा इसके लिए स्पष्ट एवं पारदर्शी नियम निर्धारित करते हुए उनको अच्छी तरह से पालन करें।

भाषण:—

अपने विचारों को सुचारू व क्रमबद्ध रूप में व्यक्त करना भाषण कहलाता है। विद्यालय में अध्यापक द्वारा विषय का निर्धारण किया जाता है तथा छात्रों को विषय का ज्ञान कराकर सभा या कक्षा में प्रस्तुत कराया जाता है। इसे निश्चित समय में पूरा करना होता है। भाषण श्रोताओं के भावों और विचारों को उत्प्रेरित तथा प्रभावित करने का साधन है। भाषण का हमारे लोकतंत्र में बड़ा महत्व है।

भाषण को प्रभावशाली बनाने के लिए उसे विषय का गहरा अध्ययन करना चाहिए। सफल वक्ता के लिए विषय का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। शिक्षक को तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता तथा समसामयिक विषयों पर आयोजित भाषण

कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेकर कक्षा में कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए।

रेडियो:—

श्रवण कौशल को विकसित करने में रेडियो का बहुत बड़ा योगदान है। आकाषवाणी द्वारा रेडियो पर प्रसारित होने वाले समाचारों, एकांकी, वार्तालाप, प्रहसन आदि के द्वारा बालकों में अद्भुत विकास होता है। दूर-दराज़ रहने वाले बालकों को एक ही साथ आधुनिकतम् घटनाओं तथा नवीनतम् सूचनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। बालकों के विकास को देखते हुए बालकों को रेडियो से प्रसारित होने वाले समाचार को सुनने और उसका मुख्य अंश प्रार्थना सभा पर सुनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इस प्रकार विद्यार्थी रेडियो से ध्यान से समाचार सुनेगा तथा प्रार्थना स्थल पर खड़े हुए अन्य छात्र भी समाचार सुनकर अपना ज्ञान बर्द्धन करेंगे। इससे बालकों का श्रवण एवं भाषण दोनों कौशलों का अद्भुत विकास होता है।

दूरदर्शन:—

टेलीविजन आज के युग में बहुत ही प्रभावशाली शिक्षा का उपकरण है। इसके द्वारा बालकों के कान और आँख दोनों इंद्रियाँ सक्रिय होती है। इसीलिए दूरदर्शन को दृश्य-श्रव्य सामग्री के अंतर्गत गणना की जाती है। इस दृष्टि से चलचित्र और दूरदर्शन में समान गुण है। विद्यार्थी इसके द्वारा ध्यान से सुनने, बातचीत करने भाषण देने तथा अभिनय करने जैसे अनेक गुणों का स्वतः विकास करने लगता है। इस प्रकार दूरदर्शन के माध्यम से अनेक बातों को बालक सरलतापूर्वक सीख लेता है। अध्यापक को चाहिए कि विद्यार्थियों के द्वारा देखे हुए दूरदर्शन की रोचक प्रसंगों को कक्षा में सुनाने का उपक्रम करना चाहिए। इससे बालकों में भाषाई कुशलता संबंधी अनेक कौशलों का स्वतः विकास होता है।

खेल बालकों को अत्यंत प्रिय लगता है। भाषा-विकास के लिए शब्द-खेल अत्यंत कारगर सिद्ध होता है। शब्द-खेल मानसिक विकास का प्रथम सोपान है। खेल-खेल में बालक की बुद्धि तेज हो जाती है। शब्द भंडार बढ़ाने का यह सबसे अधिक उपयोगी विधि है। शब्द-खेल के अनेक पहलू हैं, जैसे- क्रियात्मक शब्दों का खेल, अक्षर-पत्ते का खेल, शब्द-सीढ़ी का खेल आदि। उदाहरण-

दफ्ती के टुकड़ों पर क्रियात्मक शब्द जैसे चलना, पढ़ना, लिखना, नाचना, कूदना, खुजलाना, रोना, गाना, हँसना आदि लिख दिया जाता है। इन टुकड़ों को कक्षा में फेंक दिया जाता है। जिस छात्र को दफ्ती का जो टुकड़ा मिले उसी के अनुरूप क्रिया करने का आदेश दिया जाता है।

श्यामपट्ट पर छात्रों को बारी-बारी से बुलाकर शब्द के अंतिम अक्षर से नए शब्दों की रचना द्वारा सीढ़ी बनाने का उपक्रम कराया जाता है। जैसे—

33

पहेली:—

पहेली बालकों के विकास की एक मनोरंजनपूर्ण विधा है। पहेली के माध्यम से बालकों में श्रवण कौशल का पर्याप्त विकास होता है। इससे कल्पनाशीलता, सोचने की क्षमता और अभिव्यक्ति को प्रगट करने का अवसर प्राप्त होता है। पहेली के उदाहरण—

- (क) नाक पर रहता हूँ, पकड़े दोनों कान।
बाबू लोग मुझे लगाकर बड़े झाड़ते शान।। (चष्मा)
- (ख) ऐ चिड़िया हट, तेरा पंख बोले पट।
तेरा छिलका ओदार, तेरा मांस मजेदार।। (ईख)
- (ग) तीन अक्षर का मेरा नाम उलटा सीधा एक समान। (जहाज/रहर)
- (घ) चोटी मेरी हरी—हरी, बदन है मेरा लाल।
खाकर मुझको सी—सी करते, हो जाते बेहाल।। (लाल मिर्च)
- (छ) एक जानवर ऐसा, जिसके दुम पर पैसा। (मोर)

उच्चारण शिक्षा:—

भाषा का लिखित रूप मौखिक रूप पर निर्भर है, अतः भाषा में उच्चारण का महत्वपूर्ण स्थान है। सही उच्चारण की जानकारी दो रूपों में हो सकती है। एक तो अध्यापक के मुख से सुनकर और दूसरे व्याकरण की सहायता से वर्णों का उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न की सही जानकारी प्राप्त करके। वर्ण भाषा की मूल ध्वनियाँ हैं। इनका उच्चारण प्राणवायु के द्वारा हुआ करता है। प्राणवायु श्वास—नलिकाओं के मार्ग से सिकुड़ती या फैलती हुई जिह्वा से संबंध स्थापित करके तालू, मूर्धा, दंत, ओष्ठ आदि मुख के भिन्न—भिन्न भागों से जब टकराती है, तो भिन्न—भिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। जिस ध्वनि के उच्चारण में मुख का जो अंग विशेष सहायक सिद्ध होता है वही अंग उस ध्वनि का उच्चारण—स्थान होता

है। हिंदी वर्णमाला के वर्णों के उच्चारण—स्थान तालू, मूर्धा, दंत, ओष्ठ, नासिका आदि है।

हिंदी वर्णमाला की ध्वनियों को दो भागों में बाँटा गया है—

(क) स्वर (ख) व्यंजन

स्वर:—

उच्चारण की दृष्टि से स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं, जिनके उच्चारण से मुँह के भीतर से बाहर आती हुई हवा के रास्ते में किसी भी प्रकार रुकावट नहीं होती। स्वर निम्नलिखित हैं—

अ, आ, ऑ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

अं (– अनुस्वार) अः (: विसर्ग)

स्वर का वर्गीकरण:—

स्वर दो प्रकार के होते हैं— मूल तथा संयुक्त

मूल स्वर:— जो स्वर दो या अधिक स्वरों के मेल से बने हों, उसे संयुक्त स्वर कहते हैं। जैसे—

अ, आ, ऑ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ओ।

संयुक्त स्वर:— जो स्वर दो या अधिक स्वरों के मेल से बने हों, उसे संयुक्त स्वर कहते हैं। जैसे ऐ, औ

विषेय: अब 'ऋ' को स्वर नहीं माना जाता है क्योंकि उच्चारण करते समय व्यंजन 'र' ध्वनि 'इ' स्वर के साथ सम्मिलित है। 'ऑ' ध्वनि अंग्रेज़ी से आए शब्दों में प्राप्त होती है, जैसे—

ऑफिस, डॉक्टर, कॉलेज, हॉल आदि।

उच्चारण के समय के आधार पर स्वर के दो भेद हैं— ह्रस्व तथा दीर्घ।

ह्रस्व स्वरों के उच्चारण में थोड़ा समय लगता है और **दीर्घ** स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है।

जब स्वरों के उच्चारण में द्वस्व स्वर से लगभग तिगुना समय लगे, तब उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं।

सामान्यतः अ, इ, उ, ऋ द्वस्व तथा शेष दीर्घ स्वर हैं। प्लुत स्वर का उदाहरण— 'ओम्' आदि। हिंदी में प्लुत स्वर का उच्चारण नहीं के बराबर है।

व्यंजन और उनका वर्गीकरण:

हिंदी देवनागरी लिपि में निम्नलिखित व्यंजन हैं—

स्पर्शः—	कवर्ग —	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
	चवर्ग —	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
	टवर्ग —	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
	तवर्ग —	त्	थ्	द्	ध्	न्
	पवर्ग —	प्	फ्	ब्	भ्	म्
	अंतस्थ	—य्	र्	ल्	व्	
	उष्म	—श्	ष्	स्	ह्	

इनके अतिरिक्त हिंदी में निम्नलिखित व्यंजनों का प्रयोग होता है—

ड़, ढ (उक्षिप्त व्यंजन)

क ख ग ज ङ (नुक्ता वाले ये व्यंजन हिंदी में सम्मिलित हैं।)

संयुक्ताक्षर (संयुक्त व्यंजन):—

जब दो या अधिक व्यंजन ध्वनि मिलते हो तो संयुक्त व्यंजन कहा जाता है, जैसे—

सत्य में त् + य = त्य

क्षमा में क् + ष = क्ष

पत्र में त् + र = त्र

ज्ञान में ज् + ञ = ज्ञ संयुक्त व्यंजन का प्रयोग हुआ है।

वर्णों का उच्चारण स्थान:

वर्णों का उच्चारण मुख के भिन्न-भिन्न अवयवों को छूती हुई बाहर निकलती है। जो ध्वनि जिस स्थान को छूती है वहीं उसका उच्चारण स्थान होता है। वर्णों का उच्चारण एवं उसका स्थान निम्नलिखित है—

कंठ्य — कंठ और निचली जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण—

अ, आ, कवर्ग, ह और विसर्ग।

तालव्य — तालू और जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण—

इ, ई, चवर्ग, य और श।

दंत्य — दाँत और जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण—

तवर्ग, ल, स।

ओष्ठ्य — दोनों होठों के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण—

उ, ऊ, पवर्ग।

कंठ तालव्य — कंठ और तालू में जीभ के स्पर्श से बोले जाने वाले वर्ण—

ए, ऐ।

कंठोष्ठ्य — कंठ द्वारा जीभ और ओठों के कुछ स्पर्श से बोले जाने

वाले वर्ण— ओ, औ।

दंतोष्ठ्य — दाँत और जीभ और ओठों के कुछ योग से बोले जाने

वाले वर्ण — व

मात्राएँ:

स्वरः— अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ए ओ औ अं अः

। ि ि ु ू ॠ ॡ ॢ ॣ । ॥

विशेष—

(i) अ की मात्रा नहीं होती। सभी व्यंजन 'अ' के साथ उच्चरित होते हैं।

- (ii) (,) हलन्त का चिह्न है। जैसे क्, म्। इसका प्रयोग वर्ण का अर्द्ध उच्चारण के लिए प्रयोग होता है।
- (iii) उ, ऊ की मात्राएँ 'र' के साथ मध्य में लगती है। जैसे— रूप,, रूपया
- (iv) ऋ की मात्रा 'र' के साथ नहीं लगती।
- (v) श् के साथ 'ऋ' की मात्रा जुड़ने पर भिन्न रूप बनता है, जैसे—
 $\text{श्} + \text{ऋ} = \text{श्रृ}$ (श्रृंगार)

अनुनासिक (ँ) — ऐसे स्वरों का उच्चारण नाक और मुख से होता है और उच्चारण में लघुता रहती है। जैसे— गाँव, चाँद, साँचा, आँगन, दाँत आदि।

अनुस्वार (ँ) — यह स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है। इसका उच्चारण नासिका से होता है, इसलिए इसे नासिक्य व्यंजन भी कहते हैं। जैसे— अंगूर, लंगूर, अंगद, कंकड़ आदि।

अल्पप्राण — महाप्राण

हिंदी व्यंजनों का वर्गीकरण प्राण (वायु) की मात्रा के आधार पर भी होता है: अल्पप्राण और महाप्राण।

अल्पप्राण:—

कम वायु के साथ जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसे अल्पप्राण कहते हैं। वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण तथा य, र, ल, व अल्पप्राण होते हैं।

उदाहरण (क वर्ग में— क, ग, ड.) पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण।

महाप्राण:—

अधिक वायु के साथ जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसे महाप्राण कहते हैं। वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा श, ष, स, ह महाप्राण है। जैसे— कवर्ग में — ख, घ (दूसरा, चौथा वर्ग)

घोष — अघोष

घोष:—जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों में कंपन होता है, उसे घोष कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवां वर्ण तथा य, र, ल, व वर्ण घोष है।

अघोष:—जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वरतंत्रियों में कंपन नहीं होता, उसे अघोष ध्वनि कहते हैं। हिंदी के पाँचों वर्गों की पहली और दूसरी ध्वनियाँ अघोष हैं तथा श, ष, स भी अघोष ध्वनि है।

उच्चारण करते समय उक्त समस्त तथ्यों पर ध्यान देते हुए बालकों के समक्ष सतर्कता पूर्वक उच्चारण करना चाहिए ताकि छात्र ध्यानपूर्वक सुन सकें।

भाषण कौशल:—

भाषण वक्ता और श्रोता के बीच का संबंध है, जिसे जोड़ने की कड़ी है भाषण का विषय। भाषण.कौशल भाषा पर अधिकार कराने का प्रमुख साधन है। भाषा का लिखित रूप गौण माना जाता है। इसके उच्चरित रूप ही भाषाई प्रकृति का वास्तविक परिचायक है। इस कौशल में दक्षता प्राप्त करने के लिए उचित यति, गति, आरोह, अवरोह, बलाघात, अनुतान आदि तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भाषण का संपादन करना चाहिए।

यति:—

अपने भाव एवं विचारों को गद्य एवं पद्य के माध्यम से व्यक्त करते समय जब बीच में रुकना पड़ता है, तो इस रुकावट के क्षण को 'यति' कहते हैं।

मौखिक कथनों में यति के समुचित प्रयोग से भाषा प्रभावकारी एवं रुचिकर बन जाती है, जिससे वक्ता अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने में सफल हो जाता है।

गति:—

वाचन या पठन के दरम्यान् धारा—प्रवाह के साथ विचार व्यक्त करने की प्रक्रिया को 'गति' कहते हैं। वक्ता जब उचित गति के साथ अपने भावों को अभिव्यक्ति करता है, तो श्रोता प्रभावशाली होकर उसके समस्त विचारों को हृदयंगम करता जाता है, जिससे उसके अधिगम क्षेत्र में विकास होता है।

आरोह — अवरोह:—

विचारों एवं भावों के अनुरूप भाषा का समुचित उतार—चढ़ाव ही 'आरोह—अवरोह' कहलाता है। भाषण में आरोह—अवरोह के सही प्रयोग से भाषण प्रभावशाली होता है। श्रोता के मन—मस्तिष्क पर आरोह—अवरोह अपना प्रभाव डालती है। आरोह—अवरोह के अनुरूप उचित भाव—भंगिमा एवं अंगों का संचालन भाषा को सरस, बोधगम्य एवं प्रभावशाली बनाता है।

बलाघात:—

किसी शब्द के उच्चारण में अक्षर पर जो बल दिया जाता है, उसे 'बलाघात' कहते हैं। हिंदी में दीर्घ स्वरों पर प्रायः बलाघात होता है, जैसे— 'आदमी' में 'आ' और 'मी' दीर्घ स्वरयुक्त हैं, अतः उच्चारण करते समय इन दोनों पर बलाघात होगा। भाषाई व्यवस्था के अनुरूप बलाघात का अभ्यास कराना, इसकी सहज आदत विकसित करना आवश्यक है।

ध्वनियों का शब्द —युग्मों में उच्चारण अभ्यास:

उच्चारण शिक्षण के लिए शब्द स्तर से लेकर वाक्य स्तर तक विद्यार्थियों की सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल उन्हें अनेक प्रकार के अभ्यास की

आवश्यकता है। पहले ध्वनि अभ्यास कराए जाएँ। ये अभ्यास अनेक रूपों में हो सकती है। सुविधा के लिए केवल यहाँ शब्द-युग्मों का नमूना दृष्टव्य है—

नमूना इ — ई

इ — दिन	ई — दीन	उ — कुल	ऊ — कूल
बिन	बीन	उन	ऊन
तिन	तीन	सुन	सून
पित्त	पीत	चुना	चूना
ए — सेर	ऐ — सैर	ओ — ओर	औ — और
बेर	बैर	कोर	कौर
मेल	मैल	खोल	खौल
मेला	मैला	खोला	खौला
स — सिर	च — चिर	स — सूर	श — शूर
सना	चना	सेर	शेर
साबूत	चाबुक	सिला	शिला
द — दान	ध — धान	पेड़	ढ — चढ़ो
दाता	धाता	पड़	पढ़
दूत	धूप	अड़	गढ़
गदा	गधा	गुड़ाई	कढ़ाई

अध्यापक निर्देशः— अरुणाचल प्रदेश के छात्रों में क्षेत्रियता के प्रभाव के फलस्वरूप कुछ ध्वनियों के उच्चारण में साम्यता दिखती है जैसे—

क — ख	ब — भ	द — ध
ड़ — ढ	न — ण	छ — क्ष
च — छ	ण — ङ	स — श
स — च	त — थ	

इन समश्रुतिभिन्नार्थक ध्वनियों के उच्चारण काठिन्य को उक्त नमूने का अभ्यास कराएँ, जिससे छात्रों का उच्चारण शुद्ध किया जा सके।

अभिव्यक्ति की क्रियाओं का नियोजन:—

अपने भावों और विचारों को प्रभावी ढंग से सार्थक शब्दों में बोलकर व्यक्त करने को अभिव्यक्ति कहते हैं। इसमें वक्ता एवं श्रोता दोनों का होना आवश्यक है। बालकों में अभिव्यक्ति का विकास धीरे-धीरे होते हुए उनके व्यवहार में कुछ परिवर्तन आने लगते हैं। बालकों के अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक को निम्नलिखित क्रियाओं के आयोजन पर विशेष ध्यान देना चाहिए—

स्वागत करना:—

किसी मेहमान, अधिकारी मंत्री, सम्मानित व्यक्ति के आने, सभा में उपस्थित आदि के समय उनके सम्मान में जो प्रशंसापरक कथन प्रयोग में पाए जाते हैं वे स्वागत के शब्द कहलाते हैं। ऐसे अवसरों पर सम्मानित अतिथि के अनुकूल यथोचित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। स्वागत में केवल सम्मानित अतिथियों का ही स्वागत नहीं करना चाहिए अपितु सभा में आए हुए अन्य लोगों का भी स्वागत करना नहीं भूलना चाहिए।

परिचय देना:—

अभिवृत्त्यात्मक कौशलों को विकसित करने में किसी सभा या समारोह में आमंत्रित मुख्य अतिथि या श्रेष्ठ व्यक्तियों के संबंध में संक्षिप्त विवरण देना परिचय कहलाता है। परिचय देते समय व्यक्ति का नाम, पद, व्यवसाय, अनुभव आदि के विषय में जानकारी दी जाती है। इससे व्यक्ति अपने आपको सम्मानित अनुभव करता है तथा उपस्थित व्यक्तियों को भी उसकी महत्ता का बोध होता है। आरंभ में विद्यार्थी कक्षा में एक-दूसरे का परिचय कराने का अभ्यास करें। इससे बालकों की अभिव्यक्ति जागृत होगी।

धन्यवाद ज्ञापन:—

किसी सेवा, कृतज्ञता, सहायता आदि के बदले कहे गये शब्द धन्यवाद ज्ञापन कहलाते हैं। धन्यवाद ज्ञापन षिष्टता और सदाचार का परिचायक है। हमें उचित मौके पर किसी को धन्यवाद ज्ञापन करने की चूक नहीं करनी चाहिए। विद्यार्थियों में भी इस गुण का विकास कक्षा में कराना चाहिए। जैसे— धन्यवाद, आपके सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ। आपका एहसान में कभी नहीं भूलूँगा आदि धन्यवाद ज्ञापन के ऐसे प्रचलित कथनों का अभ्यास कक्षा में छात्रों द्वारा कराए जाएं।

कविता:—

कविता मानव मन की सुंदर अभिव्यक्ति है। कविता में मानवीय गुणों का विकास करने की अद्भुत शक्ति है। कविता में वर्णित हर्ष, शोक, करुणा, उत्साह, प्रेम, वात्सल्य आदि भावों के सौंदर्य का परिचय देने से छात्रों में अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है। इस परिचय के आधार पर छात्र स्वयं कविता के मर्मस्पर्शी स्थलों को पहचान कर उनका आनंद अनुभव करने में समर्थ होने लगते हैं।

कविता वाचन भाषण कौशल का मूलभूत आधार है। बालगीतों, नादसौंदर्य वाली कविताओं को उचित गति, लय और भाव के अनुसार शिक्षक स्वयं पढ़े तथा विद्यार्थियों को उसी के अनुरूप पढ़ने को कहें तथा उन्हें कंठस्थ करने के लिए प्रोत्साहित करें।

कहानी:—

अभिव्यक्ति के विकास में कहानी की महत्वपूर्ण भूमिका है। बच्चों को कहानी सुनना और सुनाना अच्छा लगता है। विशेषकर पशु-पक्षियों, परियों, राजा-रानी आदि की कहानियाँ बच्चों को बहुत भाती हैं, बड़े होने पर उन्हें धीरे-धीरे साहस, संघर्ष, युद्ध आदि की कहानी अच्छी लगने लगती है।

कहानी की विधा विद्यार्थियों के मन-मस्तिष्क में नव-चेतना का संचार करती है, इसलिए कक्षाओं में विद्यार्थियों द्वारा कहानियों के आधार पर नाटकीकरण करवाना चाहिए। इस प्रयोजन से बालकों की अभिव्यक्ति प्रगट तो होती ही है साथ ही साथ बोलने के प्रति उनकी झिझक दूर होती है तथा आत्मविश्वास बढ़ता है।

मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ:-

मौखिक अभिव्यक्ति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

1. मौखिक अभिव्यक्ति से उच्चारण में स्पष्टता आने लगती है और धीरे-धीरे बोलने की क्षमता का विकास होने लगता है।
2. मौखिक अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्ति उचित गति के साथ वह अपने विचारों को आसानी से कह सकता है।
3. मौखिक अभिव्यक्ति के उचित अभ्यास से वह अच्छा वक्ता बन सकता है, तथा उसके अंग-संचालन और हाव-भाव में कुशलता आ जाती है।
4. बोलने वाला अपने विचारों में क्रमबद्धता रख सकता है।
5. मौखिक अभिव्यक्ति वक्ता के वाणी में जोष और शब्द-शक्ति का विकास करता है।
6. मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्ति देखी-सुनी घटना का वर्णन अच्छे ढंग से कर सकता है।
7. मौखिक अभिव्यक्ति के जरिए व्यक्ति अपनी बात को बहुत ही सहज ढंग से व्यक्त कर लेता है।
8. मौखिक अभिव्यक्ति में समय की बहुत बचत होती है।
9. मौखिक अभिव्यक्ति में व्यक्ति व्याकरणिक संरचनाओं से मुक्त रहकर अपनी अभिव्यक्ति को आसानी से प्रगट कर लेता है।

10. मौखिक अभिव्यक्ति के दरम्यान व्यक्ति अपने भावों को स्पष्ट करने के लिए आंगिक चेष्टाओं का प्रयोग करता है, जिससे उसकी बात को समझने में आसानी हो जाती है। यह कार्य किसी लिखित सामग्री से संभव नहीं हो सकता।

इकाई 4:

वाचन एवं लेखन कौशल:

भाषा के चार कौशलों में से दो वाचन और लेखन गौण कौशल हैं। इनका संबंध भाषा की गौण व्यवस्था अर्थात् लिपि-प्रतीकों से है। औपचारिक शिक्षा के क्रम में छात्रों को पढ़ना और लिखना सिखाया जाता है। लिपि प्रतीकों के माध्यम से विचारों की लिखित अभिव्यक्ति लेखन कौशल के रूप में विकसित होती है।

वाचन-कौशल बालक के भाषाई विकास का मुख्य सोपान है। यह ऐसी भाषाई श्रृंखला है जो अपनी पूर्ववर्ती और परवर्ती श्रृंखलाओं से सहज संबद्ध है। इसका विकास भाषाई कुशलता का विशेष परिचायक है। वाचन कौशल को पुख्ता करने के लिए निम्नलिखित रूपों का सहारा लिया जा सकता है—

शब्दों में वर्णों को अलग करके पढ़ना एवं लिखना—

कलम = क् + अ + ल् + अ + म् + अ

किताब = क् + इ + त् + आ + ब् + अ

कैलाश = क् + ऐ + ल् + आ + श् + अ

विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

त्रिषूल = त् + र् + इ + श् + ऊ + ल् + अ

पंचानन = प् + अं + च् + आ + न् + अ + न् + अ

रक्षामंत्री = र् + अ + क् + ष + आ + म् + अं + त् + र् + ई

ग्लेषियर = ग् + ल् + ए + श् + इ + य् + अ + र + अ

विरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द् + ध् + अ

उज्ज्वल = उ् + ज् + ज् + व् + अ + ल् + अ

नम्रता = न् + अ + म् + र् + अ + त् + आ

प्रार्थना = प् + र् + आ + र + थ् + अ + न् + आ

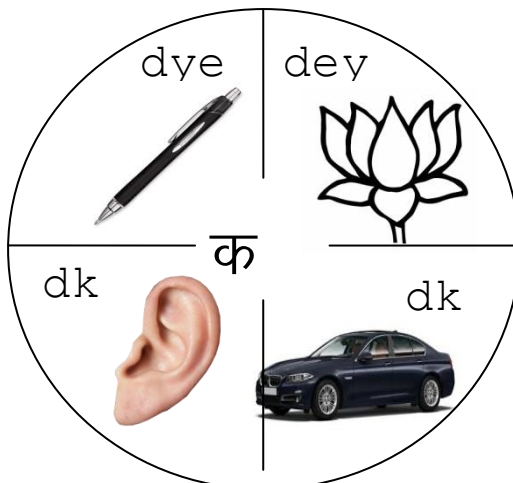
कृत्रिम = क् + ऋ + त् + र् + इ + म् + अ

मार्मिक = म् + आ + र् + म् + इ + क् + अ

उपर्युक्त वर्ण विच्छेदों का बारंबार वाचन एवं लेखन के अभ्यास से छात्रों की भाषागत त्रुटियों को दूर किया जा सकता है। वर्णों के विच्छेद से शब्दों की रचना की वास्तविकता का पता चलता है और छात्र शुद्ध-षुद्ध उच्चारण करने लगते हैं। प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों को इसका अभ्यास कक्षा में कराना अत्यंत आवश्यक है।

मोटे अक्षरों वाले फ्लैश कार्डों को पढ़ना:—

फ्लैश कार्ड अत्यंत साधारण, कम खर्च वाले और प्रभाकारी उपकरण हैं। इसमें चित्रों, तस्वीरों, लिखित वर्णों व शब्दों का समायोजन रहता है। लिंग, वचन और काल की जानकारी बड़ी सरलता से गतिशील चित्रों के माध्यम से समझाई जा सकती है। वर्णमाला शिक्षण में इसकी उपलब्धि तो काबिले तारीफ़ है। एक वर्ण पर अनेक शब्द दिए जाते हैं, जो उस वर्ण से आरंभ होते हैं। शिक्षक फ्लैश कार्ड का समुचित उपयोग करके छात्रों की भाषाई कुशलता में इजाफ़ा कर सकते हैं। शिक्षकों को कक्षा के अनुसार अपने से ही कार्ड तैयार कर लेना चाहिए, जैसे— व्याकरण तथा वर्तनी की अषुद्धियाँ, काल, रचना उपसर्ग इत्यादि।



^d* o.kZ ds fp=kRed
 ॥yS'k dkMZ dk ,d
 uewuk

संयुक्त वर्णों को पढ़ना एवं लिखना :

वाचन एवं लेखन प्रक्रिया में छात्रों को संयुक्त वर्णों के उच्चारण में कठिनाई होती है, फलस्वरूप लिखने में अषुद्धियाँ प्रायः देखने को मिलती हैं। इन समस्याओं को

दूर करने के लिए शिक्षक को प्रारंभिक कक्षाओं में संयुक्त वर्णों का भरपूर प्रयास करना चाहिए। संयुक्त वर्णों का रूप निम्नलिखित है—

1. स्वतंत्र रूपः— आज्ञा, क्षत्रिय, पक्षी, त्रिषूल
2. दो व्यंजन वाले रूपः— प्रसन्न, विद्यालय, अड्डा, लड्डू, लट्ठू, उल्लू, पत्ता
3. अल्प-प्राण महाप्राण वाले रूपः— उद्धार, प्रसिद्ध, गट्ठर, पत्थर
4. संधि रूपः— दुस्साहस (दुः+साहस), दिग्गज (दिक्+गज), उज्ज्वल (उत्+ज्वल)

रास्ते पर चलने के संकेतः—

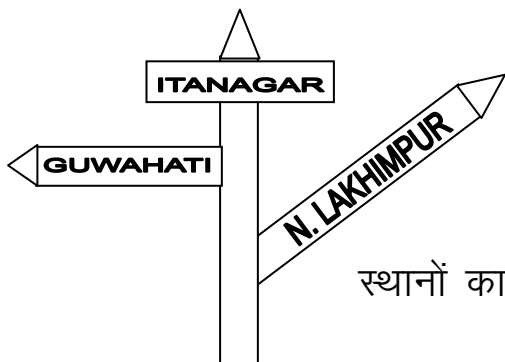
रास्ते पर चलने के लिए कुछ नियम होते हैं। छात्र इसका अध्ययन सामाजिक विषय में करते हैं। सड़क के दोनों तरफ पटरियाँ होती हैं। चलते-चलते पटरियाँ दो राहे, तिराहे, चौराहे आदि जगहों को पार करती आगे बढ़ती जाती है। मुसाफिरों की सुविधा के लिए जगह-जगह सूचना स्तंभों पर संकेत लिखे रहते हैं। कहीं तो मात्र संकेत ही भर रहता है। एक सुसंस्कृत नागरिक को इन समस्त संकेतों की जानकारी होनी चाहिए। इससे यात्रा सुखद तो होती ही है साथ ही साथ साइन बोर्ड पर लिखे महत्वपूर्ण सूचनाओं की जानकारी भी प्राप्त होती है।

अध्यापक को उन सूचना-पट्टों पर लिखी सूचनाओं एवं जानकारीयों को पढ़ने के लिए छात्रों को प्रेरित करना चाहिए। इससे छात्रों का वाचन कौशल विकसित होता है। साथ ही साथ अनेक प्रकार की जानकारीयों भी प्राप्त होती हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे आत्मनिर्भर होकर स्वतः ही संकेतों व सूचनाओं के माध्यम से अपना कार्य कर पाते हैं। इतना ही नहीं उन्हीं सूचनाओं के माध्यम से बालक के जीवन में अच्छी आदत की शुरुआत भी पनपने लगती है।

रास्ते पर चलने के कुछ संकेत निम्नलिखित हैं।



दूरी के संदर्भ में संकेत



स्थानों का संकेत



विद्यालय



पेट्रोल पंप



अस्पताल

वाचन के रूप:-



बाएं मुड़ें



शवर्जित



ज्ञान प्राप्ति में वाचन (पढ़ना, पठन) का अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह ज्ञानार्जन का मुख्य साधन है। वाचन कौशल में दक्षता हासिल करने के लिए वाचन के निम्नलिखित रूपों की जानकारी करना आवश्यक है। वे हैं:

सस्वर वाचन:—

स्वर (बोलकर) सहित पढ़ने को सस्वर वाचन कहते हैं। इसमें शब्दों का उच्चारण, वाक्यों का सार्थक ध्वनि समूहों में विभाजन अनुतान, विराम—चिह्न, प्रवाह आदि महत्वपूर्ण हैं। सस्वर वाचन के दो रूप होते हैं— आदर्श वाचन एवं अनुकरण वाचन।

आदर्श वाचन शिक्षक के द्वारा उचित यति, गति के साथ शुद्ध उच्चारण द्वारा किया जाता है और शिक्षक के जैसा ही छात्रों द्वारा पढ़ना अनुकरण वाचन कहलाता है। दोनों प्रक्रियाओं में शुद्ध रूप से बोलकर भावानुसार अर्थ समझते हुए पढ़ना ही सस्वर वाचन का वास्तविक स्वरूप है।

सस्वर वाचन की विशेषताएँ:—

सस्वर वाचन की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. सस्वर वाचन में खड़े होने का ढंग, पुस्तक पकड़ने की विधि, पुस्तक से आँखों की दूरी, सिर न हिलाना, पुस्तक पर उंगली न रखना तथा सहज एवं स्वाभाविक ढंग से पढ़ना इसकी खास विशेषता है।
2. इसमें शब्दों का शुद्ध उच्चारण, शुद्ध बलाघात, अनुतान वाक्यों का सार्थक पदबंधों में विभाजन, विराम चिह्नों का ध्यान सामग्री की प्रकृति के अनुकूल भावपूर्ण वाचन जरूरी है।
3. सस्वर वाचन एक औपचारिक प्रक्रिया है क्योंकि इसका वाचन दूसरों के लिए किया जाता है।
4. सस्वर वाचन में श्रोताओं की संख्या व दूरी तथा विषय की प्रकृति पर सुर की ऊँचाई तथा गति निर्भर करती है।

5. सस्वर वाचन एक कौशल है।

मौन वाचन:—

पुस्तक या अन्य किसी लिखित सामग्री को मन ही मन अर्थ समझते हुए पढ़ना मौन वाचन कहलाता है। इस वाचन में पढ़ते समय होठ नहीं हिलना चाहिए तथा दाँत भी दिखाई नहीं देने चाहिए। मौन वाचन में कक्षा का वातावरण अत्यंत शांत होना चाहिए क्योंकि वाचन की प्रक्रिया मन ही मन चलती है। कतिपय बाधाओं से मौन अध्ययन का सिलसिला टूट सकता है। अर्थ बोध और भावनुभूति मौन वाचन के आवश्यक लक्षण हैं।

मौन वाचन की विशेषताएँ:—

1. मौन वाचन ज्ञानार्जन का मुख्य आधार है क्योंकि इसमें अर्थग्रहण पर बल होता है।
2. मौन वाचन में पढ़ने की गति तीव्र होती है, किंतु सामग्री की प्रकृति तथा संदर्भ के अनुसार पढ़ने की गति घटाई—बढ़ाई जा सकती है।
3. मौन वाचन में पुस्तक को पढ़ते समय सामान्य दूरी पर रखना, बिना होंठ हिलाए तथा बुदबुदाए पढ़ना, पृष्ठ पर अंगुली न रखना तथा स्वयं अर्थ समझते जाना आदि बातें सम्मिलित हैं।
4. मौन वाचन के कई रूप हैं— सरसरी निगाह से तेज पढ़ना, गंभीर अध्ययन करना, निश्चित सामग्री को ढूँढ़ के पढ़ना आदि।
5. मौन वाचन एक अनौपचारिक प्रक्रिया है, क्योंकि इसका पठन विभिन्न संदर्भों में अपने लिए ही किया जाता है।
6. मौन वाचन में मस्तिष्क पर बहुत कम बल पड़ता है, जिससे थकावट नहीं होती, फलस्वरूप अधिक मात्रा में पढ़ा जा सकता है।

7. ग्रे और रॉस के परीक्षणों के अनुसार कक्षा पाँचवीं के छात्र सस्वर वाचन में एक मिनट में 170 शब्द बोलते हैं, जबकि मौन वाचन में 210 शब्द बोलते हैं।
8. बालक का ध्यान केंद्रित रहता है।
9. स्वाध्याय की आदत मौन वाचन से होती है।
10. मौन वाचन से किसी दूसरे को व्यवधान (बाधा) नहीं पहुँचता।

गहन वाचन:—

भाषा में कुछ ऐसी पाठ्य-सामग्री होती है, जिसका अध्ययन गहनता तथा सूक्ष्मता के साथ किया जाता है। इस प्रक्रिया से बालक पाठ्य वस्तु तक पहुँचता है। गहन वाचन से बालक की मनन, चिंतन, कल्पना और अर्थ-ग्रहण करने की शक्ति का विकास होता है। गहन वाचन का उद्देश्य छात्रों को सामग्री में निहित विचारों तथा भावों को गहराई से ग्रहण करना सिखाना है। गहन वाचन पढ़ने के विकास का चरम सोपान है। छात्रों को इस स्तर तक सहज रूप में ले जाना उचित है।

गहन वाचन में छात्र गंभीरता से भाव-ग्रहण कर सके, इसके लिए प्रारंभ में निधारित अंश का वाचन करने के पूर्व उस अंश की जानकारी से संबंधित कुछ प्रश्नों को श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों को यह निर्देश दिया जाए कि उन्हें ध्यान में रखकर वे उस अंश का गहन वाचन करें। वाचन करने के पश्चात् छात्रों से उन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त किया जाए। इस प्रकार प्रारंभ में कक्षा में ही गहन वाचन करना तथा आवश्यक जानकारी प्राप्त करना सिखाया जाए। आगे चलकर छात्रों को स्वतंत्र रूप से गहन वाचन द्वारा भाव-ग्रहण करना सिखाया जाए, जिससे वे विषय-सामग्री के वास्तविक अर्थ एवं भाव को ग्रहण कर सकें, इसके लिए व्यवस्थित प्रयत्न की आवश्यकता है।

अध्यापक को चाहिए कि छात्रों को निम्नलिखित नियमों को बतावें ताकि उनके गहन वाचन में सहायता मिल सके—

1. वाचन का प्रयोजन सदैव ध्यान में रखना चाहिए।
2. प्रत्येक अनुच्छेद के केंद्रीय विचार को दृढ़ता से ग्रहण करते हुए चलना चाहिए।
3. वाचन करते समय अपनी चिंतन प्रक्रिया को चालू रखते हुए पुरानी और नई जानकारी के समन्वय के आधार पर परिणाम निकालते हुए चलना चाहिए।
4. पूरी बात को पढ़ लेने पर उसकी एक रूप-रेखा मन में बना लेनी चाहिए।
5. वाच्य वस्तु के विभिन्न अंशों को दिए जाने वाले समय की मात्रा को आवश्यकतानुसार बदलते रहना चाहिए।

शब्दकोष देखना एवं पढ़ना:—

शब्दकोष भाषा के विकास में अपनी प्रभावी भूमिका निभाता है। छात्रों के लिए शब्दकोष उसके शब्दभंडार बढ़ाने का मार्गप्रदर्शक है। छात्रों को पढ़ने के दरम्यान अनेक प्रकार की शाब्दिक कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। शब्दों के अर्थ, लिंग की पहचान, वचन, प्रत्यय, उपसर्ग एवं उसकी व्युत्पत्ति आदि की जानकारी के लिए शब्दकोष को देखने की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे समय में शब्दकोष छात्रों की समस्या का समाधान करता है। छात्रों को शब्दकोष देखने की प्रक्रिया को समझना चाहिए।

शब्दकोष में अुक्रमणिकानुसार संपूर्ण शब्दों के अर्थ एवं उसकी विस्तृत जानकारी दी गई होती है। यह शब्दकोष की क्षमता एवं पृष्ठों एवं पुस्तक का आकार संक्षिप्त है तो उसमें विस्तृत जानकारी नहीं होगी यदि वृहद् शब्दकोष है तो उसमें हर तरह की जानकारी प्राप्त हो जाती है।

बहुत से लोगों को हिंदी शब्दकोष की रचना—प्रणाली से भली—भांति परिचित नहीं होने के कारण उन्हें शब्द ढूँढ़ने में काफी समय लग जाता है। पाठकों को चाहिए कि कोई शब्द उन्हें यथास्थान नहीं मिल रहा है तो यह समझने का प्रयास करें कि वह शब्द किसी अन्य शब्द से मिलकर तो नहीं बना है। ऐसा करने से उन्हें उक्त शब्द उस अन्य शब्द के साथ रखा हुआ मिल जाएगा। जैसे— कमजोर, खानदान, दरकार, दुविधा, पाबंद, लाचार आदि ऐसे शब्द हैं जो क्रम में न मिलकर क्रमशः कम, खान, दर, दु, पा एवं ला आदि शब्दों के साथ समस्त रूप में दिखाई पड़ेंगे। इसी तरह प्रत्ययों से बने संस्कृत के मूल शब्द अलग से रखे गए होते हैं। जैसे— क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्ताक्षर हैं। हिंदी वर्णमाला में “ह” के बाद क्ष, त्र, ज्ञ दिया रहता है, इसी भ्रम के कारण विद्यार्थी इन्हें कोष में भी “ह” के बाद देखने लगते हैं। पर यह गलत है, इन्हें अन्य संयुक्त वर्णों के समान ही देखना चाहिए अर्थात् क्ष को ‘क’ वर्ण के ‘त्र’ को त वर्ण के और ‘ज्ञ’ को ज वर्ण के अंतर्गत देखना चाहिए। इसी प्रकार हिंदी शब्दकोष में स्वीकृत वर्णानुक्रम निम्नलिखित हैं—

1. अं, अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ इसके बाद क से ह तक के सभी वर्ण क्रमानुसार।
2. प्रत्येक व्यंजन में भी क्रम से मात्राओं के बाद उनके संयुक्त रूप जैसे—
कं, क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ के बाद क्य, क्र, क्व आदि से आरंभ शब्द।
3. अनुस्वार(ँ) और अनुनासिक(ँ) से युक्त वर्ण से बने शब्द अकारादि क्रम में प्रत्येक वर्ण के पहले रखे जाते हैं, इसके पश्चात् वर्ण क्रम में शब्दों का संयोजन मिलता है, जैसे अंक, आँकना, अंगार आदि शब्द ‘अ’ से बने शब्दों के क्रम में पहले दिए जाते हैं, इसलिए शब्दकोष में, अकड़, अकड़ना

आदि शब्द अंक, आँकना, के बाद मिलेंगे। अनुस्वार और अनुनासिक की प्राथमिकता इसी क्रम में सभी वर्णों के साथ मानी गई है।

अध्यापक को चाहिए कि शब्दों के सही अर्थ की जानकारी के साथ विद्यार्थियों को शब्दकोष देखने की राय देते हुए उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थियों को शब्दकोष देखने का अभ्यास हो जाने पर शब्दार्थ की कठिनाई वे स्वयं ही दूर कर सकेंगे और शब्दार्थ जानने के लिए वे शिक्षक या अन्य व्यक्ति पर निर्भर नहीं रहेंगे।

लेखन शिक्षण की विधियाँ:-

लेखन—कला मानव समाज की एक महत्वपूर्ण खोज है। इस वर्तमान रूप में पहुँचते-पहुँचते हजारों साल का सफ़र तय किया है। लेखन एक कला है, जिस प्रकार मौखिक भाषा में ध्वनि का महत्व होता है और उच्चारण की शुद्धता आवश्यक होती है, उसी प्रकार लिखित भाषा में वर्तनी का विशेष महत्व है और अक्षरों का सुडौल व सुंदर होना तथा वर्तनी की शुद्धता आवश्यक है।

लेखन शिक्षण की विधियों में रूपरेखा अनुकरण विधि, मांटेसरी विधि, जेकॉटॉट विधि, पेस्टालाजी की रचनात्मक प्रणाली चित्र विधि आदि प्रसिद्ध हैं। परंतु इसके अलावा भी लेखन शिक्षण—प्रणाली को सफल बनाने में निम्नलिखित विधियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जो निम्नांकित है—

सुलेख:-

सुलेख का अर्थ है— सुंदर लिखावट। बालक इस विधि में वर्णों या वाक्यों को सुंदर और सुडौल अक्षरों में रचना करता है तथा उचित गति के साथ भी लिखता जाता है। सुलेख लिखते समय वर्ण के विभिन्न अवयवों की बनावट, उनकी स्पष्टता वर्णों में स्वर—मात्राओं का उचित योग, वर्ण से वर्ण और शब्द से शब्द के बीच की उचित दूरी, सीधी षिरोरेखा आदि बिंदुओं पर भी विशेष ध्यान

दिया जाता है। पी0डी0 पटनायक के शब्दों में “निस्संदेह ही लेखन में सुलेख का उतना ही महत्व है, जितना भाषण में उच्चारण का।”

अनुच्छेद लिखते समय बॉर्डर ओर से 10.12 पाई का स्थान छोड़कर लिखें। सुलेख का संशोधन छात्रों के सामने ही लाल रंग की स्याही से करना चाहिए ताकि विद्यार्थी को अपनी गलती का एहसास हो सके।

अनुलेख:-

अनुलेख का अर्थ है— ‘लेख का अनुकरण’ अर्थात् जैसा लिखा है वैसा ही खिलना। इसमें छात्र स्वतंत्र रूप से किसी पुस्तक या पत्रिका या शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे लेख का अनुकरण करके कॉपी पर लिखता है। इसके अभ्यास से भाषा की शुद्धता का ज्ञान होता है। लिखावट सुंदर होती है। अतः अनुलेख वर्ण रचना का चरमतम सोपान माना जा सकता है। अनुलेख का मुख्य उद्देश्य है— शुद्ध वर्तनी सहित लेखन का अभ्यास करना। गृहकार्य के रूप में इस प्रकार का अभ्यास लाभकारी रहता है। यह ध्यान रहे कि इस कार्य की जाँच अवश्य करनी चाहिए।

प्रतिलेख:-

इस अभ्यास विधि में छात्र लिखित सामग्री को देखकर अपनी पुस्तिका में लिखता है। इसे नकल करना भी कहते हैं। ध्यान रहे कि इसमें छात्रों को परिचित शब्दों/ वाक्यांशों को ही लिखवाना चाहिए ताकि वह वाचन तथा प्रतिलेखन में रुचि बनाए रखे। प्रतिलेख अनुलेख का ही विकसित रूप है। इसमें पाठ्य-पुस्तक या पत्रिका के किसी अंश का अनुकरण किया जाता है। इसमें लिखावट छात्रों की सुविधा के अनुसार बड़ा-छोटा हो सकता है। जबकि अनुलेख में जैसा लिखा होता है, वैसा ही लिखना पड़ता है।

श्रुतलेख:-

श्रुतलेख का तात्पर्य सुनकर लिखना है। इसका उद्देश्य वक्ता द्वारा उच्चारण किए गए ध्वनियों को कान लगाकर सुनना तथा तदनुरूप उचित गति, स्पष्टता एवं शुद्धता से लिखने का स्वच्छतापूर्वक अभ्यास करना है। श्रुतलेख से छात्रों की श्रवणेन्द्रिय प्रखर होती है तथा साथ ही साथ एकाग्रता भी बढ़ती है।

श्रुतलेख का अभ्यास कराते समय सूक्ष्म ध्वनियों के भेद वाले वर्णों तथा ङ-ढ, ढ-ढ़, ङ-ड़ आदि का लेखन अथवा ह्रस्व-दीर्घ मात्रा के श्रवण-अभ्यास के लिए देना अधिक उपयुक्त रहता है। विराम चिह्नों को ध्वनि तथा उच्चारण के आधार पर सावधानी से सुनने को आधार बनाकर श्रुतलेख की सामग्री की रचना की जा सकती है।

हिंदी – गिनती

1	एक	26	छब्बीस	51	इक्यावन	76	छिहत्तर
2	दो	27	सत्ताईस	52	बावन	77	सतहत्तर
3	तीन	28	अट्ठाईस	53	तिरपन	78	अठहत्तर
4	चार	29	उनतीस	54	चौवन	79	उन्नासी
5	पाँच	30	तीस	55	पचपन	80	अस्सी
6	छह	31	इक्कतीस	56	छप्पन	81	इक्यासी
7	सात	32	बत्तीस	57	सत्तावन	82	बयासी
8	आठ	33	तैंतीस	58	अठ्ठावन	83	तिरासी
9	नौ	34	चौतीस	59	उनसठ	84	चौरासी
10	दस	35	पैंतीस	60	साठ	85	पच्चासी
11	ग्यारह	36	छत्तीस	61	इकसठ	86	छियासी
12	बारह	37	सैंतीस	62	बासठ	87	सत्तासी
13	तेरह	38	अड़तीस	63	तिरसठ	88	अट्ठासी
14	चौदह	39	उनतालिस	64	चौंसठ	89	नवासी
15	पंद्रह	40	चालीस	65	पैंसठ	90	नब्बे
16	सोलह	41	एकतालीस	66	छियासठ	91	इक्यानवे
17	सत्रह	42	बयालीस	67	सड़सठ	92	बानवे
18	अट्ठारह	43	तैंतालीस	68	अड़सठ	93	तिरानवे

19	उन्नीस	44	चवालीस	69	उनहत्तर	94	चौरानवे
20	बीस	45	पैंतालीस	70	सत्तर	95	पंचानवे
21	इक्कीस	46	छियालीस	71	एकहत्तर	96	छियानवे
22	बाईस	47	सैतालीस	72	बहत्तर	97	सतानवे
23	तेईस	48	अड़तालीस	73	तिहत्तर	98	अठानवे
24	चौबीस	49	उनचास	74	चौहत्तर	99	निन्यानवे
25	पच्चीस	50	पचास	75	पचहत्तर	100	एक सौ

इकाई 5:

पाठ योजना निर्माण:

किसी भी कार्य को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए उसकी योजना तैयार करना आवश्यक हो जाता है। पाठ को कक्षा में प्रस्तुत करने, उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति करने के लिए पाठ की योजना तैयार की जाती है।

षिक्षण में निर्दिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निश्चित कार्यक्रम गठित किया जाता है। इसके अंतर्गत कार्य के उद्देश्य, कार्य की अवधि, कार्य संपन्न कराने के सोपान, कार्य-विधि, पाठ्यवस्तु एवं तदनुकूल षिक्षण-सामग्री, दृढीकरण एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया का समावेश होता है। इस प्रकार इन सभी पक्षों के विस्तृत विवेचन के पश्चात् पाठ को प्रस्तुत करने की रूप-रेखा तैयार की जाती है। पाठ-योजना का तात्पर्य निश्चित समय में निर्दिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्य-सामग्री का निर्धारण करते हुए उसके प्रस्तुतीकरण का क्रम निश्चित करना तथा षिक्षण-प्रक्रिया को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए सहायक-सामग्री का प्रयोग करते हुए सिखाए गए षिक्षण-बिंदु के दृढीकरण के लिए निश्चित क्रम निर्धारण करना है।

वार्सिंग के अनुसार “पाठ संकेत (योजना) उन उपलब्धियों की सूची का शीर्षक है जिन्हें अध्यापक कक्षा में प्राप्त करना चाहता है। इनमें वे सभी साधन तथा क्रियाएँ भी शामिल हैं जिनकी सहायता से वे उपलब्धियाँ प्राप्त की जाती हैं।”

पाठ योजना बनाने के लिए बहुत सी पद्धति या उपागम (।चचतवबी) है परंतु दो उपागम उत्पधिक प्रचलित हैं— हरबर्ट उपागम एवं ब्लूमस मूल्यांकन उपागम। राष्ट्रीय षैक्षिक अनुसंधान और प्रषिक्षण परिषद् द्वारा दोनों के समन्वित रूप से एक अपना अलग किंतु प्रभावशाली उपागम प्रचलित किया है जिसका उदाहरण निम्नलिखित पाठ-योजनाओं में द्रष्टव्य है—

पाठ-योजना – 1 (मात्रा की)

छात्राध्यापक का नाम :-	दिनांक :-
विद्यालय का नाम :-	कालांश :- प्रथम
कक्षा :- प्रथम।	समयावधि :- 40 मिनट
विषय :- हिंदी	समय :- 9:40 से 10:20
प्रकरण :- 'इ' की मात्रा (ि) का ज्ञान	

विद्यार्थियों की संख्या:	छात्र	छात्रा	संख्या
उपस्थित:			
अनुपस्थित:			

पूर्व क्रिया	<p>1. उद्देश्य:-</p> <p>(क) सामान्य उद्देश्य :-</p> <ol style="list-style-type: none"> भाषा में प्रयुक्त शब्दों की सही वर्तनी की जानकारी देना। छात्रों की मात्रा संबंधी अशुद्धियों का परिमार्जन करना। मानक उच्चारण के साथ बोलने और पढ़ने की कुशलता का विकास करना। छात्रों में भाषा के शुद्ध रूप के प्रयोग करने की आदत पैदा करना। छात्रों में भाषाई संरचना का अभ्यास करना। <p>(ख) विषिष्ट उद्देश्य :- इस प्रकरण को पढ़ने के उपरान्त छात्रों में-</p> <ol style="list-style-type: none"> इकार संबंधित त्रुटियों का समाधान हो सकेगा। 'इ' की मात्रा को पहचान सकेंगे। 'इ' की मात्रा का प्रयोग शब्दों के साथ कर सकेंगे। 'इ-ई' में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। 'इ' के उच्चारण का समुचित प्रयोग कर सकेंगे।
-----------------	--

	<p>2. कक्षा व्यवस्था :- सामान्य कक्षा – व्यवस्था।</p> <p>3. शिक्षण – सामग्री :- फ्लैश कार्ड, चार्ट, प्रत्यक्ष वस्तुएँ, आदि।</p> <p>4. शिक्षण – विधि :- प्रयोग विधि एवं प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि।</p>					
	<p>5. प्रस्तावना :- शिक्षक छात्रों से पूर्व ज्ञान संबंधी प्रश्न पूछेगा तथा छात्र उत्तर देंगे।</p> <p>प्रश्न:-</p> <p>1. बच्चो! इस फ्लैश कार्ड पर कौन सा वर्ण लिखा है? उत्तर – क</p> <p>2. क + ि मिलाने से कैसा उच्चारण होता है? उत्तर – का</p> <p>3. 'किरन' में 'क' में कौन सा मात्रा लगा है? उत्तर –</p> <p>समस्यामूलक</p> <p>6. उद्देश्य कथन :- बच्चो! आज हम लोग इसी मात्रा को जिसे इ (ि) के नाम से जानते हैं उसका ज्ञान प्राप्त करेंगे।</p> <p>7. प्रस्तुतीकरण:-</p>					
मध्य क्रिया	शिक्षण बिंदु	शिक्षक कार्य	छात्र कार्य	श्यामपट्ट कार्य	शिक्षण सामग्री	मूल्यांकन
	'इ' की मात्रा (ि)	शिक्षक सर्वप्रथम 'इ' की मात्रा को श्यामपट्ट पर लिखकर या फ्लैश कार्ड के माध्यम से छात्रों के समक्ष प्रदर्शित करेंगे और छात्रों को उसे पहचान कराने की कोषिष करेंगे।	छात्र उत्सुकतापूर्वक शिक्षक द्वारा प्रस्तुत किये जा रहे 'इ' की मात्रा को ध्यान से देखकर पहचानने की कोषिष करेंगे।	श्यामपट्ट पर 'इ' की मात्रा को (ि) बड़े लिखावट में लिखा जाएगा तथा छात्रों को भी उसे देखकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखने का आदेश दिया जाएगा।	फ्लैश कार्ड	1. छात्रों से 'ि' की मात्रा का उच्चारण करने के लिए तथा पहचान करने के लिए प्रश्न करें।
	वर्णों में 'ि' की	शिक्षक पहले दो वर्णों में 'ि' की	छात्र शिक्षक द्वारा उच्चरित	किल रात्रि मिल गति	संकेत क	2. श्यामपट्ट

मात्रा का प्रयोग	मात्रा का प्रयोग करके उसका उच्चारण करेगा तथा छात्रों को हो रहे उच्चारण को ध्यान से सुनने को कहेगा।	किए जा रहे शब्दों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा 'ि' की मात्रा के प्रयोग को हृदयंगम करेंगे।	गिला मति किला क्षति मिला प्राप्ति		पर लिखे गए शब्दों को छात्रों द्वारा बारी-बारी उच्चारण करवाएं।
दो से अधिक वर्णों में 'ि' की मात्रा का प्रयोग	शिक्षक दो वर्णों वाले 'इ' की मात्रा के बाद उससे अधिक वर्णों में 'इ' (ि) की मात्रा का प्रयोग कराएगा तथा छात्रों से अभ्यास करवाएगा।	छात्र दो से अधिक वर्णों वाले शब्दों में 'इ' की मात्रा का अभ्यास करेंगे तथा उसका मनन करेंगे।	किताब हिसाब हिरन मिलान किरन कितना चिड़िया किसान गिलास	संकेत क	3. छात्रों को श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों को छात्रों द्वारा बारी-बारी उच्चारण करवाएं।
फलैष कार्ड का प्रयोग	सर्वप्रथम शिक्षक 'इ' की मात्रा से बने अनेक कार्डों को छात्रों में वितरण करेगा तथा छात्रों को बारी-बारी खड़ा कर उस पर लिखे गए शब्दों को पढ़ने का आदेश देगा।	छात्र उत्सुकतापूर्वक फलैष कार्ड को लेकर पढ़ेगा तथा 'इ' की मात्रा का ज्ञान अर्जन करेगा।	—	फलैष कार्ड	4. फलैष कार्ड पर लिखे शब्दों को दिखाकर पढ़ने के लिए कहना तथा सही-गलत का आकलन करना।
चार्ट का प्रयोग	शिक्षक चार्ट पर लिखे 'इ' की मात्रा तथा वर्णों में उसके प्रयोग को छात्रों के समक्ष प्रदर्शित करेगा।	छात्र रुचिपूर्वक चार्ट पर बने 'इ' की मात्रा वाले वर्णों का अध्ययन करेंगे।	—	चार्ट	5. उच्चारण करें— मिठाई, किताब, पिता, कितना, त्रिफला
8. पुनरावृत्ति:— शिक्षक प्रश्नोत्तर के माध्यम से पठित प्रकरण का पुनरावृत्ति					

	<p>करेगा।</p> <p>प्रश्न:—</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. 'इ' की मात्रा वाले पाँच शब्दों को बताइए। 2. 'किताब' में किस वर्ण में 'इ' की मात्रा लगा है? 3. (फलैष कार्ड दिखाते हुए) इस फलैष कार्ड पर लिखे शब्द को पढ़कर सुनाइए। 4. (श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों को दिखाकर) पिताजी, किसी की मूर्ति, सामूहिक, व्यक्तिगत। आप बताइए कि श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों में कुल कितने 'इ' की मात्रा का प्रयोग हुआ है?
उत्तर क्रिया	<p>9. गृह कार्य:—</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. अपनी पाठ्य पुस्तक से 'इ' की मात्रा वाले कम से कम दस शब्दों को लिखिए। 2. दो वर्णों वाले शब्दों में 'इ' की मात्रा लगाकर चार सार्थक शब्दों की रचना कीजिए।
	<p>10. संदर्भ:— पाठ्य पुस्तक (एन.सी.ई.आर.टी.)</p>

प्रशिक्षक का हस्ताक्षर

प्रशिक्षणार्थी का हस्ताक्षर

पाठ—योजना — 2

छात्राध्यापक का नाम :-

दिनांक :-

विद्यालय का नाम :-

कालांश :- प्रथम

कक्षा :- तृतीय

समयावधि :- 40 मिनट

विषय :- हिंदी

समय :- 9:40 से 10:20

प्रकरण

:- समस्यात्मक व्यंजन ध्वनि (उ-ड़, श-ष)

विद्यार्थियों की संख्या:	छात्र	छात्रा	संख्या
उपस्थित:			
अनुपस्थित:			

पूर्व क्रिया	<p>1. उद्देश्य:-</p> <p>(क) सामान्य उद्देश्य :-</p> <ol style="list-style-type: none"> हिंदी ध्वनियों की विशेषताओं को पहचानना। व्यंजन गुच्छों के सही उच्चारण का अभ्यास कराना। मानक उच्चारण के साथ बोलने और पढ़ने की कुशलता का विकास करना। उच्चारण दोष के कारण शब्दों के अर्थगत अंतर के प्रति छात्रों को सचेत करना। <p>(ख) विषिष्ट उद्देश्य :- इस प्रकरण को पढ़ने के उपरान्त छात्रों में-</p> <ol style="list-style-type: none"> शब्दों के अर्थगत अंतर की जानकारी हो सकेगी। समस्यात्मक ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण से भाषण कौशल का विकास हो सकेगा। लेखन कौशल में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे। उ-ड़ और श-स के समस्यात्मक व्यंजन ध्वनि के अंतर को समझ सकेंगे। <p>2. कक्षा व्यवस्था :- सामान्य कक्ष - व्यवस्था।</p> <p>3. शिक्षण-सामग्री :- फ्लैश कार्ड, प्रत्यक्ष वस्तुएँ, चार्ट इत्यादि।</p> <p>4. शिक्षण-विधि :- प्रयोग विधि एवं प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि।</p>
	<p>5. प्रस्तावना :- शिक्षक छात्रों से पूर्व ज्ञान संबंधी प्रश्न पूछेगा तथा छात्र संभावित उत्तर देंगे।</p>
मध्य क्रिया	

प्रश्न:-

1. छात्रो! मेरे साथ उच्चारण करो। **उत्तर** – छात्र उच्चारण कर रहे हैं?
(पेड़-डाल, सड़क-पाल,
सुंदर-शंकर, शाम-साम)
2. चार्ट पर वाक्यों को पढ़िए। **उत्तर** – (छात्र वाक्य को पढ़ रहे हैं)
(i) देश में सम्राट अशोक का शासन था
(ii) शेखर ने स्याही से सुंदर दृष्य रचा था।
3. क्या ड-ड़ और श-ष की ध्वनियों में कोई अंतर महसूस हो रहा है? **उत्तर** – (समस्यामूलक)

6 उद्देश्य कथन :- बच्चो! आज हम लोग इन्हीं ध्वनियों के अंतर को समझते हुए इनका शुद्ध उच्चारण करेंगे।

7. प्रस्तुतीकरण:-

शिक्षण बिंदु	शिक्षक कार्य	छात्र कार्य	श्यामपट्ट कार्य	शिक्षण सामग्री	मूल्यांकन
ड-ड़ का उच्चारण I अभ्यास	सर्वप्रथम शिक्षक श्यामपट्ट पर ड व्यंजन लिखेगा तथा स्वयं मानक उच्चारण करेगा तथा छात्रों से भी उच्चारण करने के लिए कहेगा।	छात्र शिक्षक के आदेशानुसार 'ड' ध्वनि का अनुकरण वाचन करेंगे।	ड	चाक	1. छात्रों से ड का उच्चारण करवाकर शुद्ध ध्वनि का पता करेंगे।
	इसके बाद पुनः शिक्षक कक्षा में रुचि बनाए रखने के लिए 'ड' का फ्लैश कार्ड प्रदर्शित करेगा तथा ड से बने 'डमरू' शब्द का चित्र दिखाकर	छात्र फ्लैश कार्ड को देखकर उत्साहित होंगे तथा 'ड' का उच्चारण करेंगे और डमरू चित्र को देखते हुए	—	फ्लैश कार्ड	2. 'डमरू' शब्द को उच्चारण कराकर उसकी उपयोगित के बारे में पता करेंगे।

		बच्चों से ही उसका नाम पूछेगा।	उसका नाम बताने में रुचि लेंगे।			
		शिक्षक पुनः 'ड' से बने शब्दों को चार्ट के माध्यम से कक्षा में दिखाते हुए उसका आदर्श वाचन करेगा तथा छात्रों से पढ़ने के लिए कहेगा।	छात्र 'ड' से बने शब्दों का उच्चारण करने में रुचि लेंगे।	—	चार्ट	3. शिक्षक डाल, डलिया, डोली, डेरा, डबलू को पढ़ने के लिए कहेगा तथा मूल्यांकन करेगा।
		शिक्षक फिर सड़क, लड़का, लड़की, पेड़ आदि का उच्चारण करेगा तथा छात्रों से भी बोलने के लिए कहेगा।	छात्र शिक्षक के आदर्श वाचन का अनुकरण करेंगे।	(श्यामपट्ट पर 'ड' वर्ण वाले शब्दों को लिखें) सड़क, पेड़, लड़का, पड़, पेड़, पेड़ा, खड़ा, लड़ा, गड़ा, लड़ाई, चौड़ा	—	4. श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों को पढ़िए— लड़ाई, चौड़ा, खड़ा
		इसके बाद 'ड-ढ़' वाले वर्णों से बने शब्दों का वाक्य में प्रयोग कराते हुए उसका अभ्यास करवाएगा।	छात्र अब वाक्यों में हुए ड-ड़ के प्रयोग को पढ़ते हुए रुचि दिखाएंगे।	डाल से बंधी डोर टूट गई। लड़की सड़क पर खड़ी थी।	संकेत क	5. बच्चों से पढ़वाए— सड़क पर डोर पड़ी है। लड़की डोली में बैठी है।
	श-स का उच्चारण । अभ्यास	शिक्षक सर्वप्रथम श्यामपट्ट पर 'ष' वर्ण को लिखकर आदर्श वाचन करेगा तथा छात्रों से उसका अनुकरण वाचन करवाएगा।	सभी छात्र एक साथ अध्यापक के साथ 'ष' ध्वनि को उच्चरित करेंगे।	'ष'	चाक	1. 'ष' का उच्चारण करें।

	इसके बाद 'ष' से बने शब्दों को चार्ट के माध्यम से कक्षा में प्रदर्शित करते हुए उसे भी उच्चारण करेगा।	छात्र चार्ट पर लिखे 'ष' वर्ण वाले शब्दों को पढ़कर उत्साहित होंगे।	'ष'	चार्ट	2. उच्चारण करें— शाल, शोला, शंकर, शीला
	शिक्षक पुनः 'स' वर्ण को श्यामपट्ट पर लिखेगा तथा उसका उच्चारण करेगा तथा इसके बाद 'स' से बने शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखेगा तथा बच्चों से उच्चारण करवाएगा।	बच्चे 'स' का उच्चारण करेंगे तथा 'स' से बने शब्दों को पढ़कर उत्साहित होंगे।	साथी, सोना, सेवक, सूरज, सिपाही, उत्साह	—	3. उच्चारण करें— सेविका, सौगंध, सोलंकी, सुंदर, सेना
	तत्पश्चात् 'ष-स' के ध्वन्यात्मक भेद को समझाने के लिए कुछ चुने हुए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उसका आदर्शवाचन करेगा तथा छात्रों से अनुकरणन वाचन करवाएगा।	छात्र श-स के उच्चारण भेद को समझते हुए श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों का उच्चारण करने में रुचि दिखाएंगे।	साल — शाल सिला — षिला सादी — शादी सोना — शोला साला — शाला सूर — शूर सेर — शेर सर — शर	—	4. उच्चारण करें— साला — शाला सूर — शूर सादी — शादी
	शिक्षक इसके बाद 'स-ष' का उच्चारण अभ्यास हेतु वाक्यों के माध्यम से अभ्यास कराने	श्यामपट्ट पर लिखे वाक्यों को पढ़ने के लिए छात्र आगे बढ़ेंगे तथा संकेतक	वाक्य— 1) सविता की आषा टूट गई। 2) शीला ने शहर की सैर	संकेत क	वाक्य पढ़ें— 1) शेरदिल सैनिकों ने जीत हासिल की। 2) शीला ने

	हेतु श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर छात्रों को पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।	के जरिए उसका उच्चारण करेंगे।	की। 3) शीषे के सामने साड़ी है। 4) शाम को मत सोना।	सोना खरीदा। 3) सुषीला सिपाही बन गई।
	8. पुनरावृत्ति:— (1) निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए— (क) रोड, बोर्ड, रेकार्ड, स्पीड, खंड, झंडा, दंड, घमंड। (ख) जड़, गड़, अकड़, पकड़, पेड़, जकड़, पड़ा, खड़ा। (ग) शषि, सीस, सुंदर, विनाष, शंकर, सुषील। (2) निम्नलिखित शब्दों को पढ़कर ध्वन्यात्मक अंतर परखिए— सिला — षिला डल — लड़ सादी — शादी पैडल — सड़क सूर — शूर निडर — रगड़ साम — शाम डोरा — रोड़ा			
उत्तर क्रिया	9. गृह कार्य:— 1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से सही शब्द चुनकर वाक्य में खाली जगह को भरिए और वाक्य का उच्चारण कीजिए। (क) यह किताब ————— की है। (षीला / सीला) (ख) मेरा घर स्टेशन के ————— है। (पाष / पास) (ग) आज मोहन की ————— है। (षादी / सादी) (घ) लड़का ————— पर बैठा है। (डाल / जड़) (ङ) चिड़िया फुर्र से ————— गई। (भग / उड़) 2. अपनी पाठ्य पुस्तक से ड, ङ और श, स से बने शब्दों की सूची तैयार कीजिए।			
	10. संदर्भ:— पाठ्य पुस्तक (एन.सी.ई.आर.टी.)			

प्रशिक्षक का हस्ताक्षर

प्रशिक्षणार्थी का हस्ताक्षर

पाठ-योजना – 3

छात्राध्यापक का नाम :-	दिनांक :-
विद्यालय का नाम :-	कालांश :- प्रथम
कक्षा :- द्वितीय	समयावधि :- 40 मिनट
विषय :- हिंदी (कहानी)	समय :- 9:40 से 10:20
प्रकरण :- मीठी सारंगी	

छात्र विवरण

विद्यार्थियों की संख्या:	छात्र	छात्रा	संख्या
उपस्थित:			
अनुपस्थित:			

पूर्व क्रिया	<p>1. उद्देश्य:-</p> <p>(क) सामान्य उद्देश्य :-</p> <ol style="list-style-type: none"> छात्रों में कहानी को सुनकर विषय-वस्तु तथा भाव-ग्रहण करने की कुशलता विकसित करना। छात्रों में चिंतन-शक्ति का विकास करना। छात्रों में शब्द-भंडार की वृद्धि करना। छात्रों में सद्वृत्तियों एवं नैतिक गुणों का विकास करना। छात्रों में रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना। <p>(ख) विषिष्ट उद्देश्य :- इस पाठ को पढ़ने के उपरान्त-</p> <ol style="list-style-type: none"> छात्र बाल-सुलभ स्वभाव से परिचित हो सकेंगे। पाठ के माध्यम से छात्र सामान्य अर्थ से इत्तर शब्द-षक्तियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। छात्र बाल-मनोविज्ञान से परिचित हो सकेंगे। छात्र वाद्य-यंत्र सारंगी से परिचित हो सकेंगे।
--------------	--

	5. छात्र अपने व्यावहारिक जीवन में मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर सकेंगे।					
	2. कक्षा व्यवस्था :- सामान्य कक्षा – व्यवस्था।					
	3. शिक्षण – सामग्री :- पुस्तक, चार्ट, संकेतक इत्यादि।					
	4. शिक्षण – विधि :- अर्थ बोध व प्रश्नोत्तर विधि।					
मध्य क्रिया	5. प्रस्तावना:- शिक्षक छात्रों से प्रश्न पूछेगा तथा छात्र संभावित उत्तर देंगे।					
	प्रश्न			संभावित उत्तर		
	1. आप कितने वाद्य-यंत्रों का नाम जानते हो?			हारमोनियम, गिटार, तबला, बांसुरी आदि		
	2. गिटार जैसा वाद्य-यंत्र कौन सा लगता है?			सारंगी		
	3. यदि कोई खूब बढ़िया सारंगी बजाता है तो उस आवाज को क्या कहेंगे?			मीठी सारंगी		
	6. उद्देश्य कथन :- बिलकुल ठीक कहा। आज हम लोग अपनी पाठ्य-पुस्तक से 'मीठी सारंगी' नामक पाठ को पढ़ेंगे।					
	7. प्रस्तुतीकरण:-					
	शिक्षण बिंदु	शिक्षक कार्य	छात्र कार्य	श्यामपट्ट कार्य	शिक्षण सामग्री	मूल्यांकन
	प्रथम अनुच्छेद का आदर्श वाचन एवं अनुकरण वाचन	शिक्षक कहानी को रोचक ढंग से आदर्श वाचन करेगा तत्पश्चात् छात्रों से अनुकरण वाचन कराएगा।	छात्र ध्यानपूर्वक शिक्षक के आदर्श वाचन को सुनेंगे, उसके बाद शिक्षक के आदेशानुसार अनुकरण वाचन करेंगे।		पुस्तक	

मध्य क्रिया	कठिन शब्दों का अर्थ	कहानी के अंतर्गत आए कठिन शब्दों का उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर लिखेगा तथा उसका अर्थ भी लिखकर बच्चों को उत्तरपुस्तिका में लिखने का आदेश देगा।	छात्र ध्यानपूर्वक शिक्षक द्वारा बताए जा रहे कठिन शब्दों को अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखेंगे तथा उसका अर्थ समझने का प्रयास करेंगे।	शब्द अर्थ सारंगी— एक बजाने वाला यंत्र इकट्ठा— जमा दंग— हैरान आनंद— मजा ठहरिए— रुकिए	—	प्रश्न—(1) अर्थ बताइए— अच्छी, शुरू, गाँव, आवाज़, कला, दंग प्रश्न—(2) निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए। सारंगी, दंग, आनंद प्रश्न—(3) गाँव के लोग रात में इकट्ठे क्यों हो गए? प्रश्न—(4) सारंगी की आवाज़ कैसी थी? प्रश्न—(5) किसका मुँह मीठा नहीं हुआ? प्रश्न—(6) विलोम शब्द बताइए— आना, यहाँ, रात, बहुत
	प्रथम अनुच्छेद की व्याख्या	शिक्षक 'मीठी सारंगी' प्रकरण के प्रथम अनुच्छेद के चार्ट को प्रदर्शित करते हुए रोचक ढंग से हाव-भाव पूर्वक व्याख्या करेगा।	छात्र बड़ी उत्सुकता से गुरुजी द्वारा बताई जा रही व्याख्या को सुनकर आनंदित होंगे।	—	चार्ट	
	शब्द—ज्ञान	छात्रों में शब्द ज्ञान की वृद्धि हेतु शिक्षक पाठ से चुने हुए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उसका विलोम शब्द लिखेगा तथा छात्रों को उनकी उत्तर—पुस्तिका में लिखने को कहेगा। साथ ही उसे व्यावहारिक	छात्र श्यामपट्ट से शब्द—विलोम वाले शब्दों को लिखेंगे तथा उसे अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने का प्रयास करेंगे।	शब्द विलोम एक ग अनेक बहुत ग कम शुरू ग खत्म मीठी ग खट्टी पास ग दूर		

		जीवन में प्रयोग करने को उत्साहित करेगा।				
--	--	---	--	--	--	--

मध्य क्रिया	8. पुनरावृत्ति:— प्रश्न— 1. गाँव में कौन आया? 2. गाँववाले दंग क्यों हो गए? 3. भोला कहाँ बैठा था? 4. 'ये सब झूठे हैं। यह बात किसने और क्यों कही। 5. भोला सारंगी वाले के पास क्यों बैठा?
उत्तर क्रिया	9. गृह कार्य:— प्रश्न— 1. किसकी आवाज मीठी थी? 2. भोला ने क्या सोचा? 3. यदि भोला की जगह आप रहते तो क्या करते?
	10. संदर्भ:— पाठ्य पुस्तक (एन.सी.ई.आर.टी.)

प्रशिक्षक का हस्ताक्षर

प्रशिक्षणार्थी का हस्ताक्षर

पाठ-योजना – 4

छात्राध्यापक का नाम :-

दिनांक :-

विद्यालय का नाम :-

कालांश :- द्वितीय

कक्षा :- पाँचवीं

समयावधि :- 40 मिनट

विषय :- नाँवा

समय :- 10:20 से 11:00

प्रकरण :- हिंदी (कविता)

छात्र-विवरण

विद्यार्थियों की संख्या:	छात्र	छात्रा	कुलयोग
उपस्थित:			
अनुपस्थित:			

पूर्व क्रिय I	<p>1. उद्देश्य:- (क) सामान्य उद्देश्य :-</p> <ol style="list-style-type: none"> छात्रों में सहज स्वर-प्रवाह, शुद्ध उच्चारण तथा भावपूर्ण ढंग से कविता वाचन करना। छात्रों के अंदर कल्पना-शक्ति का विकास करना। कवि की कल्पनाओं, मनोभावों एवं अनुभूतियों से छात्रों को परिचित कराना। कविता के प्रति अभिरुचि पैदा करना। छात्रों में व्यक्तित्व का भावात्मक पक्ष को विकसित करना। <p>(ख) विषिष्ट उद्देश्य :- इस कविता के अध्ययन के बाद विद्यार्थी-</p> <ol style="list-style-type: none"> बचपन के खेलों को बहुत करीब से महसूस कर सकेंगे। अपने साथियों से साहचर्य स्थापित कर सकेंगे। बचपन में खेले हुए निष्ठल खेल के महत्व को समझ सकेंगे। माँ के साथ बिताए हुए बचपन के खूबसूरत पल को याद कर सकेंगे। माँ के बिताए हुए अभावग्रस्त लमहे को समझ सकेंगे। <p>2. कक्षा व्यवस्था :- सामान्य कक्षा - व्यवस्था।</p> <p>3. शिक्षण - सामग्री :- पुस्तक, चित्र, खिलौने आदि।</p> <p>4. शिक्षण - विधि :- वाचन विधि, शब्दार्थ विधि, प्रश्नोत्तर विधि।</p>	
	<p>5. प्रस्तावना :- शिक्षक छात्रों से पूर्व ज्ञान संबंधित प्रश्न पूछेंगे तथा छात्र संभावित उत्तर देंगे।</p>	
मध्य क्रिय I	प्रश्न	संभावित उत्तर
	1. बच्चों, क्या आप लोग अपने दोस्तों के साथ खेल खेलते हो?	हाँ
	2. बचपन में आप कौन-कौन से खेल खेले हैं?	गुड्डा-गुड्डी, पतंगबाजी, लुका-छिपी

3. क्या आप लोगों के खेल के समय कभी माँ बैठकर निगरानी करती थी?			हाँ		
4. जब माँ उदास बैठकर आप के खेल को देखती हो, तो उस माँ को क्या कहेंगे?			बेबस माँ		
6. उद्देश्य कथन:— हाँ, आपने बिलकुल ठीक कहा। आज हम लोग एक ऐसी ही कविता को पढ़ेंगे जिसका शीर्षक है— 'एक माँ की बेबसी।'					
7. प्रस्तुतीकरण:—					
शिक्षण बिंदु	शिक्षक कार्य	छात्र कार्य	श्यामपट्ट कार्य	शिक्षण सामग्री	मूल्यांकन
कविता का आदर्श वाचन न जाने— — उसकी बेबसी	सर्वप्रथम शिक्षक कविता को पूरे हाव-भाव एवं लय के साथ छात्रों के समक्ष आदर्श वाचन करेगा।	छात्र बड़े मनोयोग से शिक्षक द्वारा पढ़े जा रहे कविता वाचन को रुचिपूर्वक रसास्वादन करेंगे।		पुस्तक	
अनुकरण वाचन	शिक्षक छात्रों को अपने अनुसार ही कविता वाचन करने का निर्देश देगा।	छात्र, शिक्षक द्वारा पढ़ी गई कविता को उन्हीं के अनुरूप पढ़ने का प्रयास करेंगे।			
काठिन्य निवारण	तदोपरांत शिक्षक कविता के कठिन शब्दों का अर्थ बताएगा तथा छात्रों को उसे अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखने का आदेश	छात्र कविता में आए कठिन शब्दों का अर्थ समझेंगे तथा उसे अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।	शब्द अर्थ अदृश्य — जो दिखाई न दे पड़ोस से — पास के घर से टूटे खिलौने — (मुहावरा) निराशा से भरे अजूबा — अनोखा भिन्न — अलग	चॉक	प्रश्न—(1) शुद्ध उच्चारण करें— अदृश्य, अजूबा, भिन्न, घबराना, बच्चों, छटपटाहट प्रश्न—(2)

		देगा।		घबराना – भय से व्याकुल इशारों – संकेतों छटपटाहट – बेचैनी निहारती – देखती		विलोम शब्द बताइए— निकलना ग भिन्न ग अंदर ग डर ग प्रश्न—(3) टूटे खिलौने से क्या तात्पर्य है? प्रश्न—(4) रतन किसका नाम था? प्रश्न—(5) रतन के साथ कौन बैठी रहती? प्रश्न—(6) रतन की माँ की आँखों में क्या झलकती थी?
	व्याख्या	तत्पश्चात् अब शिक्षक बड़ी तन्मयता के साथ छात्रों के समक्ष सहज एवं सरल शब्दों में कविता का भावार्थ बताएगा। उस दरम्यान प्रसंगानुकूल वह अपनी आंगिक चेष्टाओं, भाव-भंगिमा ओं के माध्यम से कविता के मर्म को प्रगट करेगा। इसके तुरंत बाद साथ में लाए हुए एक छोटा बालक तथा एक बेबस माँ का चित्र छात्रों के समक्ष दिखाकर भावुकता के भाव को और पुष्ट करने का प्रयास	छात्र भी बड़ी उत्सुकतापूर्वक अपने शिक्षक के द्वारा बतलाए जा रहे कविता के भावार्थ को सुनेंगे तथा उसका मनन करते हुए अपने व्यवहार में उतारने का प्रयास करेंगे। छात्र चित्र को बड़े कौतूहलपूर्ण ढंग से देखेंगे तथा उससे प्रभावित होकर अपने मन में माँ की बेबसी के प्रति भावुक होंगे तथा माँ के प्रति आदर व सम्मान का भाव अपने मन में पिरोयेंगे।	शब्द विलोम अदृश्य ग दृश्य पास ग दूर टूटना ग जुड़ना थोड़ा ग ज्यादा बोलना ग चुप रहना माँ जो हमें जन्म देकर पाल-पोसकर बड़ा करती है, वही हमारी माँ है। माँ सबकी प्यारी होती है। वह हमें दुख से बचाकर सुख में रखना चाहती है।	चित्र	

		करेगा तथा माँ के कर्तव्यों, दायित्वों को समझाते हुए माँ के प्रति एक सुंदर भाव बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करेगा।				
	8. पुनरावृत्ति:- (1) टूटा हुआ खिलौना कैसा लगता है? (2) रतन किस मायने में दूसरे लड़कों से भिन्न था? (3) रतन के पास उसकी माँ क्यों बैठी रहती? (4) कवि को अंत में क्या याद आती है?					
उत्तर क्रिया	9. गृह कार्य:- (1) 'बेबस' शब्द में 'बे' उपसर्ग जुड़ा है। 'बे' उपसर्ग वाले चार शब्द बनाइए। (2) अपनी माँ के बारे में पाँच वाक्य लिखिए। (3) निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए— खेल, निहारती, भाषा, बेबस					
	10. संदर्भ:- पाठ्य पुस्तक (एन.सी.ई.आर.टी.)					

प्रशिक्षक का हस्ताक्षर
हस्ताक्षर

प्रशिक्षणार्थी का

पाठ-योजना – 5

छात्राध्यापक का नाम :-

दिनांक :-

विद्यालय का नाम :-

कालांश :- द्वितीय

कक्षा :- तृतीय

समयावधि :- 40 मिनट

विषय :- हिंदी (गद्य)

समय :- 10:20 से

11:00

प्रकरण

:- 'बहादुर बित्तो'

छात्र-विवरण

विद्यार्थियों की संख्या:	छात्र	छात्रा	कुलयोग
उपस्थित:			
अनुपस्थित:			

पूर्व क्रिय I	1. उद्देश्य:- (क) सामान्य उद्देश्य :- (i) छात्रों में लेखन, बौद्धिक तथा वर्कषक्ति का विकास करना । (ii) छात्रों के शब्द-भंडार में वृद्धि करना । (iii) छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि पैदा करना । (iv) छात्रों में अभिव्यक्ति का विकास करना । (v) छात्रों को शुद्ध हिंदी को पढ़ने तथा शुद्ध लिखने योग्य बनाना । (ख) विषिष्ट उद्देश्य :- इस पाठ को पढ़ने के उपरान्त- (i) छात्रों में साहस का भाव पैदा हो सकेगा । (ii) छात्रों में कहानी के प्रति सृजनात्मकता का विकास हो सकेगा । (iii) छात्रों में मुसीबत के वक्त बुद्धिमानी से काम लेने की भावना का विकास हो सकेगा । (iv) छात्र जंगली जानवरों के स्वभाव के बारे में जान सकेंगे । (v) छात्रों में कहानी के प्रति रुचि उत्पन्न हो सकेगी । 2. कक्षा व्यवस्था :- सामान्य कक्षा - व्यवस्था । 3. शिक्षण - सामग्री :- पुस्तक, चित्र, प्रत्यक्ष वस्तुएँ इत्यादि । 4. शिक्षण - विधि :- अर्थ बोध व प्रश्नोत्तर विधि, कहानी कथन विधि ।	
	5. प्रस्तावना :- (शिक्षक छात्रों से पूर्व ज्ञान संबंधित प्रश्न पूछेंगे ।	
	प्रश्न	संभावित उत्तर
	(i) आप जंगल के सबसे खूंखार जानवर का नाम बताइए?	शेर
	(ii) क्या आप शेर से मुकाबला कर सकते हैं?	जी, नहीं ।

(iii) आप शेर से मुकाबला क्यों नहीं कर सकते?			क्योंकि शेर एक खतरनाक जानवर होता है।		
(iv) यदि कोई औरत या लड़की बहादुरी से शेर से सामना करती है तो उस लड़की को हम किस नाम से पुकारेंगे?			उस लड़की को हम लोग बहादुर लड़की के नाम से पुकारेंगे।		
6. उद्देश्य कथन:- बिलकुल ठीक, आज हम लोग एक ऐसी ही कहानी को पढ़ेंगे जिस कहानी का नाम है- बहादुर बित्तो					
7. प्रस्तुतीकरण:-					
शिक्षण बिंदु	शिक्षक कार्य	छात्र कार्य	श्यामपट्ट कार्य	शिक्षण सामग्री	मूल्यांकन
आदर्श वाचन एवं अनुकरण I वाचन	शिक्षक प्रथम गद्यांश का उचित स्वर के साथ आदर्श वाचन करेगा तथा छात्रों से बारी-बारी से अनुकरण वाचन करने का निर्देश देगा। तत्पश्चात् गद्यांश में आए कठिन शब्दों के निवारण हेतु श्यामपट्ट पर उसे लिखकर छात्रों से उच्चारण करवाएगा।	छात्र शिक्षक द्वारा पढ़े जा रहे आदर्श वाचन को ध्यान से सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक के निर्देशानुसार अनुकरण वाचन करेंगे। इस दरम्यान पढ़े जा रहे अष्टुद्ध शब्दों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखे जा रहे कठिन शब्दों का ध्यानपूर्वक उच्चारण करेंगे।	बीवी - बित्तो शेर - मुझे जवाब - भूखों शर्म - लस्सी बच्चे - फौरन	पुस्तक	1. उच्चारण करें- बैल, मुझे, मैं, मैं, गुस्सा, तुम्हारे, घोड़ा
काठिन्य निवारण	शिक्षक छात्रों को शब्द ज्ञान का परिचय एवं उसके अर्थ को बताने के क्रम में कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उसका अर्थ	छात्र उत्सुकतापूर्वक शिक्षक द्वारा बताए जा रहे कठिन शब्दों के अर्थ को समझेंगे तथा उसे अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे।	शब्द अर्थ बीवी - पत्नी सुबह - प्रातःकाल वरना - नहीं तो जवाब - उत्तर गुस्सा - क्रोध	चॉक संकेतक	2. अर्थ बताइए- शर्म, जवाब, हल, चीज़, मरियल

		लिखेगा तथा छात्रों से उसे अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखने को कहेगा।		लस्सी – दही से बना व्यंजन		
	व्याख्या	<p>उसके बाद शिक्षक बड़े मनोयोग पूर्वक गद्यांश की व्याख्या करेगा। इस दरम्यान वह अपने आंगिक चेष्टाओं, हाव-भाव, आरोह-अवरोह, यति-गति के साथ भावपूर्वक प्रयोग करते हुए छात्रों को मर्म को बताने की चेष्टा करेगा। बाद में प्रसंग को प्रभावित करने एवं छात्रों को ज्ञानार्जन बढ़ाने हेतु प्रसंगानुकूल चित्र को भी कक्षा में प्रदर्शित करेगा।</p>	छात्र बड़े ही दत्तचित्त होकर गुरुजी द्वारा बताए जा रहे व्याख्या में रुचि दिखाएंगे तथा कक्षा में शांति का वातावरण बनाए रखेंगे। शिक्षक द्वारा दिखाए जा रहे चित्रों को ध्यानपूर्वक देखकर उसमें उत्सुकता दिखाएंगे।		चित्र	<p>3. प्रश्नोत्तर दीजिए— (क) किसान की बीवी का क्या नाम था? (ख) किसान खेत में क्या चला रहा था? (ग) शेर ने किसान से क्या कहा? (घ) बित्तो को गुस्सा क्यों आया? (ङ.) बित्तो ने क्या तरकीब निकाली?</p>
<p>8. पुनरावृत्ति:— (1) बित्तो कौन थी? (2) 'मैं तुझे खा जाऊँगा।' ये बात किसने और किससे कही? (3) किसान शेर के लिए घर से क्या लेने गया? (4) लस्सी किस चीज़ से बनती है? (5) शेर क्यों भाग खड़ा हुआ?</p>						

उत्तर क्रिया	9. गृह कार्य:— (1) आप अपने आस-पास वाले किसी ऐसी लड़की का नाम बताइए जो बहुत ही बहादुर हो। (2) बैल और गाय में क्या अंतर है? (3) अपनी पाठ्य-पुस्तक से कम से कम दस नुक्ता वाले शब्द लिखिए।
	10. संदर्भ:— पाठ्य पुस्तक 'रिमझिम-3' (एन.सी.ई.आर.टी.)

प्रशिक्षक का हस्ताक्षर

प्रशिक्षणार्थी का हस्ताक्षर

संदर्भ—ग्रंथ सूची

1. मनोरमा गुप्त (1985) भाषा—षिक्षण सिद्धांत और प्रविधि
केंद्रीय हिंदी संस्था, आगरा।
2. एन.सी.ई.आर.टी. (1998) मातृभाषा हिंदी षिक्षण
संपादक— रविकांत चोपड़ा, आनंद प्रकाष व्यास, नई दिल्ली।
3. डॉ गिरीष पचौरी, डॉ सीमा शर्मा (2012) हिंदी षिक्षण
आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. डॉ षिक्षा चतुर्वेदी (2011) हिंदी षिक्षण
आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. डॉ गंगाराम शर्मा, डॉ सुधीर कुमार भारद्वाज, (2008) हिंदी भाषा षिक्षण
एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
6. श्रीमती राजकुमारी शर्मा (2004) हिंदी षिक्षण
राधा प्रकाषन मंदिर, आगरा।
7. डॉ बासुदेवनंदन प्रसाद (1993) आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना
भारती भवन, पटना।